वाट्सऐप @ 94140-78380, 92140-78380 | वर्ष :3 अंक : 143 | बुधवार 20 सितम्बर 2023 | दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया

@ShabaasIndia | प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड, टोंक रोड, जयपुर

जयपुर में बढ़ने लगा डेंगू-मलेरिया का खतरा

प्राइवेट हॉस्पिटल हेल्थ स्कीम में मरीजों को भर्ती करने से कर रहे मना

जयपुर. शाबाश इंडिया

बारिश के साथ ही जयपुर में डेंगू-मलेरिया के केस फिर से बढ़ने लगे हैं। जयपुर में रोज औसत 11 केस आ रहे हैं। वहीं दूसरे जिलों से भी मरीज जयपुर पहुंच रहे हैं, इसलिए अस्पतालों में मरीजों की संख्या लगातार बढ़ने लगी है। सरकारी आंकड़ों के अनुसार राजस्थान में हर रोज 125 से ज्यादा डेंगू के नए मरीज हॉस्पिटल पहुंच रहे हैं। स्थिति ये है कि मरीजों की भीड़ को देखते हुए छोटे-बड़े प्राइवेट हॉस्पिटल संचालकों ने आरजीएचएस (राजस्थान गवर्नमेंट हेल्थ स्कीम) और चिरंजीवी हेल्थ स्कीम में मरीजों को भर्ती करने से मना कर दिया। जयपुर में कई प्राइवेट

हॉस्पिटल ऐसे हैं, जिन्होंने रेफरल केस में सरकार की हेल्थ स्कीम पर डेंगू मरीजों को भर्ती करना बंद कर दिया है। रात में आने वाले मरीजों को बेड नहीं होने या स्थिति ज्यादा खराब होने का बहाना बनाकर वापस भेजा जा रहा है। इधर, मरीजों की बढ़ती संख्या के कारण अब ब्लड बैंकों में भी प्लेटलेट्स की मांग बढ़ गई है। अब इसका संकट गहराने लगा है। जयपुर हेल्थ डिपार्टमेंट की रिपोर्ट के मुताबिक जयपुर में हर रोज डेंगू के औसत 11 केस ही आ रहे है। इससे पहले अगस्त में जयपुर में हर रोज औसतन 21 से ज्यादा केस आ रहे थे। अब दूसरे जिलों से मरीज आने के कारण यहां हॉस्पिटल में मरीजों की संख्या बढ़ रही है।

15 दिन 1700 से ज्यादा केस

मेडिकल हेल्थ डिपार्टमेंट से जारी रिपोर्ट देखे तो 1 सितंबर तक प्रदेश में कुल 2830 केस डेंगू के थे, जो 15 सितंबर तक बढ़कर 4674 से भी ज्यादा हो गए। सबसे ज्यादा केस जयपुर में 880 आ चुके हैं, जबकि सिरोही-जालोर में 3-3 केस आए हैं। अब तक डेंगू से राज्य में 6 मरीजों की मौत हो चुकी है। स्वास्थ्य निदेशालय की रिपोर्ट देखे तो पिछले 15 दिनों में डेंगू का सबसे ज्यादा प्रकोप कोटा, झालावाड़, बीकानेर, बारां जिले में रहा, जहां केस डबल हो गए। इन जिलों के अलावा टोंक, सीकर, प्रतापगढ़, पाली, नागौर, हनुमानगढ़, डूंगरपुर, बूंदी, बाड़मेर, अजमेर और अलवर ऐसे जिले हैं, जहां पिछले 15 दिन में बहुत तेजी से डेंगू के केस बढ़े है। बदलते मौसम का बेहद तेजी से असर हो रहा है।

इस बार देरी से विदाई लेगा मानसूनः नए सिस्टम पर आज से ब्रेक लगेगा, दो दिन बाद फिर सक्रिय होगा

जयपुर. कासं

विदाई बेला में बरस रहा मानसून अब दो दिन के लिए फिर से ब्रेक लेगा। इन चार दिनों में बरसी औसत 60 मिमी बारिश से अब प्रदेश में आंकड़ा सामान्य से ऊपर चला गया है। डेढ़ महीने तक बारिश नहीं होने के बाद प्रदेश में आंकड़ा औसत से 10 फीसदी तक नीचे चला गया था, अब 527.68 मिमी के मुकाबले 528.49 मिमी बारिश बरस चुकी है जो 0.2 फीसदी ज्यादा है। बीते चौबीस घंटे में पश्चिमी राजस्थान में बाड़मेर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, जालौर, पाली जिले में जोरदार बारिश हुई। मौसम विभाग के अनुसार नया सिस्टम दो दिन के लिए सुस्त पड़ेगा और पूर्वी राजस्थान के ज्यादातर भागों में आगामी दो-तीन दिन बारिश कम होगी। जोधपुर व बीकानेर संभाग हल्के से मध्यम बारिश जारी रहने की सम्भावना है। इसके बाद 22 सितंबर से पूर्वी राजस्थान के कोटा, उदयपुर, भरतपुर व जयपुर संभाग के कुछ भागों में मेघगर्जन के साथ हल्के से मध्यम दर्जे की बारिश होगी। प्रदेश में मानसून सितंबर के तीसरे हफ्ते तक विदाई लेता है लेकिन इस बार देरी से विदा होने के आसार हैं।

सितंबर माह के आखिरी हफ्ते तक चलेगा बारिश का दौर

बंगाल की खाड़ी में बन रहे नए सिस्टम से सितंबर के आखिर तक बारिश होने के आसार है। आखिरी हफ्ते में पूर्वी राजस्थान के कुछ भागों में हल्के से मध्यम बारिश की गतिविधियां है। राज्य से मानसून की विदाई देरी से होने की प्रबल संभावना है। अगले दो-तीन दिन बारिश का दौर थमेगा और 22 सितंबर से मानसून फिर से एक्टिव होने के आसार है। मौसम विभाग के अनुसार सितंबर के आखिरी हफ्ते तक हल्की से मध्यम बारिश के आसार है। बीते चौबीस घंटे में बारिश का दौर थमते ही 26 डिग्री तक आया पारा फिर से चढ़ने लगा है। गुरुवार को दिन का तापमान 32.1 डिग्री तक पहुंच गया। वहीं रात का पारा 23.8 डिग्री दर्ज हुआ। राजधानी में अब तक औसत बारिश 511.60 मिमी के मुकाबले 498.17 मिमी पानी बसर चुका है। यह आंकड़ा औसत से 2.6 फीसदी कम है। वहीं जयपुर में पूरे सीजन में बारिश का कोटा करने के लिए अभी भी 25 मिमी बारिश का जरूरत है।

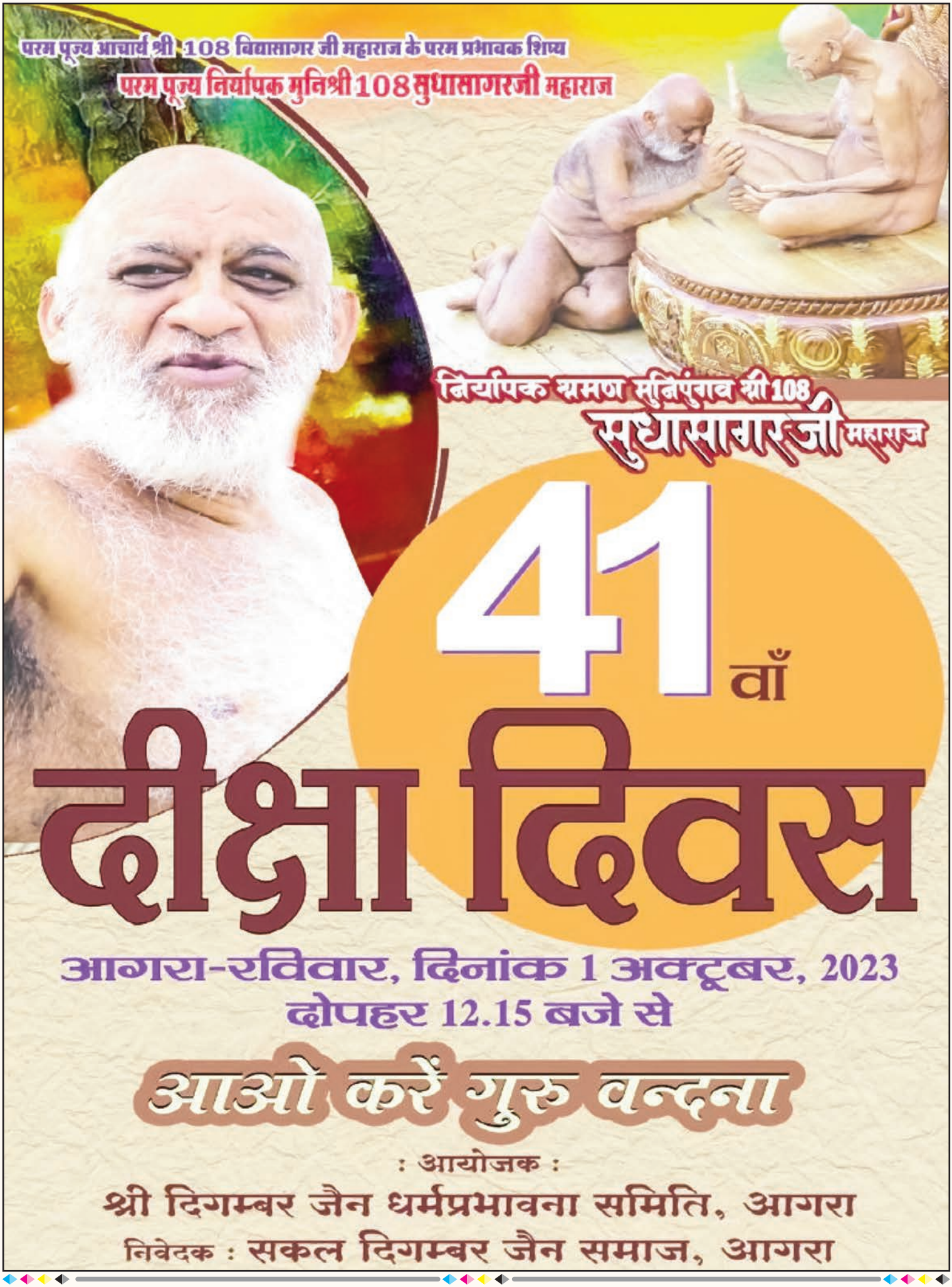
परम पूज्य आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज के परम प्रभावक शिष्य
परम पूज्य निर्यापक मुनिश्री 108 सुधासागरजी महाराज
निर्यापक श्रमण मुनिपुंगव श्री 108
सुधासागरजी महाराज
41 वाँ
दीक्षा दिवस
आगरा-रविवार, दिनांक 1 अक्टूबर, 2023
दोपहर 12.15 बजे से
आओ करें गुरु वन्दना
: आयोजक :
श्री दिगम्बर जैन धर्मप्रभावना समिति, आगरा
निवेदक : सकल दिगम्बर जैन समाज, आगरा

श्रावक संस्कार शिविरों के जनक परम पूज्य तीर्थचक्रवर्ती जगतपूज्य
निर्यापक श्रमण मुनिपुंगवश्री 108 सुधासागर जी महाराज
क्षुल्लक गौरव श्री 105 गंभीर सागर जी महाराज
के मंगल सानिध्य में आगरा की पुण्य धरा पर

30 वां श्रावक शिविर संस्कार

आगरा–दिनांक 19 से 29 सितम्बर 2023 तक

– शिविर आयोजक स्थल–
श्री महावीर दिगम्बर जैन इण्टर कॉलेज परिसर, हरीपर्वत, आगरा (उ.प्र.)

शिविर पुण्यार्जक

श्रावक श्रेष्ठी श्री निर्मल-उर्मिला, वीरेंद्र-उषा रेखा
रजत-आयुषी, रौनक-अदिति,
विभोर विन्नी हर्षिल द्रव्या जियांशी मोठ्या परिवार

श्रावक श्रेष्ठी श्री हीरालाल-वीना,
दिवाय-कोमल, उत्कर्ष दिविषा काव्या
अर्हम बैनाडा परिवार

श्रावक श्रेष्ठी श्री राजेश-रजनी,
निखिल-पूजा, शोभित-आरती,
कनिष्का हनीशा, आध्या सेठी परिवार

श्रावक संस्कार शिविर
निर्देशक
हुकम जैन 'काका'
94141-84618
निर्देशक
दिनेश गंगवाल
93145-07802

सुधा अमृत वर्षायोग–2023, आगरा

जगत पूज्य निर्यापक श्रमण मुनिपुंगवश्री 108 सुधासागर जी महाराज का
41वां मुनि दीक्षा दिवस समारोह अश्विन वदी तृतीया
दिनांक 01 अक्टूबर 2023 को दोपहर 12:15 से मनाया जायेगा।

शिविर आयोजक:- श्री दिगम्बर जैन धर्म प्रभावना समिति, आगरा (उ.प्र.)

वेद ज्ञान

गुण की सब जगह पूजा

गुण पूजनीय तब बनते हैं, जब जीवन में विचार और आचरण का समन्वय होता है। इसके लिए कठोर साधना करनी होती है। वस्तुतः किसी मार्ग को पकड़कर उस पर चलते जाना साधना नहीं है। साधना सदा उच्च आदर्शों की उपलब्धि के लिए की जाती है। महावीर ने साधना की थी, गौतम बुद्ध ने साधना की थी। उन्होंने राजपाट का मोह छोड़ा, घरबार का त्याग किया और सारे वैभव को ठुकराकर उस चरम लक्ष्य को प्राप्त करने का प्रयास किया, जिसकी प्राप्ति के बाद पाने को कुछ भी नहीं रह जाता। आधुनिक युग में विवेकानंद, महात्मा गांधी और आचार्य तुलसी ने वही किया। स्वेच्छा से अकिंचन बने और जीवन के अंतिम क्षण तक साधना के मार्ग पर अडिग निष्ठा और मजबूती से चलते रहे। इन युग-प्रवर्तकों का स्मरण करके आज भी श्रद्धा से मस्तक नत हो जाता है। अपने जीवन से उन्होंने बता दिया कि मूल्यों की स्थापना किस प्रकार की जाती है और अपने जीवन को किस प्रकार ढाला जाता है। भारतीय जीवन दर्शन का एक मंत्र है-सादा जीवन उच्च विचार। देखने-सुनने में यह बड़ा सरल लगता है, लेकिन उतना ही कठिन है। जीवन में अधिकांश बुराइयां इस मंत्र की अव्हेलना से होती हैं। सादगी और सात्विकता का चोली-दामन का साथ है। जिसमें सादगी का गुण होता है, वह असात्विक कभी हो नहीं सकता और ऐसा व्यक्ति सांसारिक मोह-माया से दूर रहता है। भारतीय संस्कृति गुणों की खान है। हमारे यहां हमेशा इस बात पर जोर दिया गया है कि मनुष्य हर तरह से शुद्ध रहे। संयम से जीवन जिए। तप और साधना से जीवन को चमकाए। भगवान महावीर ने तो यहां तक कहा है कि कठोर साधना से आत्मा-परमात्मा बन सकती है। गुणी मनुष्य सार को ग्रहण करते हैं और छाया को छोड़ देते हैं। जिसकी कथनी और करनी में अंतर नहीं होता, वही समाज में आदर के योग्य बनता है। गुण की सब जगह पूजा होती है। आज के युग में इसकी ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। आज मानव-मूल्यों का पतन हो रहा है, भौतिक मूल्य चारों ओर छा गए हैं। यही वजह है कि नाना प्रकार की विकृतियों से मानव, समाज और राष्ट्र आक्रांत हो गया है। इंसान का अपना प्रिय संगीत टूट रहा है। वह अपने से, अपने लोगों और प्रकृति से कट रहा है।

संपादकीय

विश्व कप से पहले टीम इंडिया के हौंसले बुलंदी पर

एशिया कप में भारतीय क्रिकेट टीम की शानदार जीत से निस्संदेह खिलाड़ियों का मनोबल बढ़ा है और क्रिकेट प्रेमियों में अगले महीने से शुरू होने वाले विश्वकप को लेकर उम्मीदें बलवती हुई हैं। हालांकि एशिया कप के प्रदर्शन को विश्वकप मुकाबलों के पैमाने पर कस कर नहीं देखा जा सकता, मगर इसमें जिन टीमों को पराजित कर भारतीय टीम ने विजय हासिल की है, उनसे उसका वहां भी मुकाबला होना है। आमतौर पर भारतीय टीम का पाकिस्तान की टीम से कड़ा मुकाबला होता है। एशिया कप में वह भी थी, मगर भारतीय टीम के सामने अंतिम मैच तक नहीं पहुंच पाई। श्रीलंका की टीम भी भारत को जोरदार टक्कर देती है, मगर इस बार उसे जिस तरह पराजय का सामना करना पड़ा, उसमें कई कीर्तिमान भारतीय टीम के नाम दर्ज हो गए। अंतिम मुकाबले में श्रीलंकाई टीम केवल पचास रन बना पाई और पंद्रह ओवर तथा दो गेंदों पर ही वह मैदान से बाहर हो गई। भारतीय टीम के लिए यह बहुत आसान लक्ष्य था। मगर भारतीय गेंदबाज मोहम्मद सिराज ने जैसी तूफानी गेंदबाजी की, वैसी गेंदबाजी अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में बहुत कम मौकों पर देखी गई है। एक ओवर में चार विकेट झटकने वाले वे दुनिया के चौथे गेंदबाज बन गए। सात ओवरों में उन्होंने छह विकेट लिए। खेल में जो टीम अपने प्रतिद्वंद्वी पर मनोवैज्ञानिक दबाव बनाने में कामयाब हो जाती है, उसकी जीत तय मानी जाती है। पहले बल्लेबाजी करने का फैसला कर श्रीलंका की टीम रनों का पहाड़ खड़ा करने के मंसूबे से मैदान में उतरी तो जरूर थी, मगर एक ओवर में ही चार खिलाड़ियों के बाहर हो जाने के बाद उस पर मनोवैज्ञानिक दबाव इतना बढ़ गया कि वह अंत तक उबर नहीं पाई। इसका पूरा लाभ भारतीय गेंदबाजों ने उठाया और श्रीलंकाई टीम को पचास रनों पर समेट दिया। उसके बाद बल्लेबाजी करने उतरे दोनों भारतीय खिलाड़ी इस आसान लक्ष्य को हासिल कर नाबाद लौटे। यह पहली बार था जब अंतरराष्ट्रीय एकदिवसीय प्रतिस्पर्धा में भारतीय टीम के सामने कोई टीम इतने कम रनों का लक्ष्य रख पाई थी। इसके पहले श्रीलंका की ही टीम भारतीय टीम के सामने 2014 में अट्ठावन रनों पर सिमट गई थी। इस प्रतिस्पर्धा में भारतीय टीम अंतरराष्ट्रीय एकदिवसीय खेलों में पहली ऐसी टीम बन गई है, जिसने दो अवसरों पर अपनी प्रतिद्वंद्वी टीम को दस विकेट से हराया। इसके पहले 1998 में जिम्बाब्वे की टीम को शारजाह में दस विकेट से हराया था। इस प्रतिस्पर्धा में एक बड़ा कीर्तिमान शुभमन गिल ने भी अपने नाम दर्ज किया, जिन्होंने कुल 302 रन बना कर इतिहास रच दिया। हालांकि एशिया कप में सदा से भारत का दबदबा रहा है। उसने आठवीं बार यह कप अपने नाम किया है। श्रीलंका की टीम भी इस मामले में बहुत पीछे नहीं है। छह बार वह भी यह कप जीत चुकी है। पाकिस्तान महज दो बार इस कप पर कब्जा जमा पाया है। ये तीनों टीमें विश्वकप मुकाबले में भी उतरेंगी। इस तरह एशिया कप मुकाबले के अनुभवों से इन टीमों को विश्वकप प्रतिस्पर्धा में अपना प्रदर्शन सुधारने का एक आधार मिलेगा। आजकल खेल तकनीक पर ज्यादा निर्भर हो गए हैं।

-राकेश जैन गोदिका

परिदृश्य

शिल्पकारों का मान

कारीगर और शिल्पकार हजारों वर्षों से देश की समृद्धि का मूल आधार रहे हैं। प्रशिक्षण, प्रौद्योगिकी और आधुनिक उपकरण इनके काम को आसान बनाते हैं। मगर ये अकुशल, अप्रशिक्षित होते हैं तो इनका काम ही नहीं, तरक्की के रास्ते भी बंद होते हैं। केंद्र सरकार ने ऐसे ही शिल्पकारों और कारीगरों को उबारने, बाजार से प्रतिस्पर्धा करने लायक और इनके काम को बेहतर बनाने के लिए प्रधानमंत्री विश्वकर्मा योजना की शुरूआत की है। यह योजना मूल रूप से धोबी, बढ़ई, कुम्हार, दर्जी, मछुआरे, नाई, सुनार, लुहार, हलवाई, मोची, मूर्तिकार आदि तबकों को ध्यान में रख कर लाई गई है। ये ऐसे लोग हैं जिनके लिए आज की प्रतिस्पर्धी दुनिया में आजीविका कमाना बहुत मुश्किल हो गया है, लेकिन इनके बिना हमारी जरूरतें भी पूरी नहीं होतीं। गांवों में तो बढ़ई, लुहार, टोकरी बुनने वाले जैसे तमाम कारीगरों के बिना किसी का काम ही नहीं चल पाता। इस योजना की शुरूआत करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा भी कि जैसे शरीर में रीढ़ की हड्डी की भूमिका होती है, ठीक वैसे ही हमारी जिंदगी में विश्वकर्मा यानी दस्तकारों, कारीगरों और शिल्पकारों की अहमियत होती है। मगर जितना मुश्किल इन कारीगरों के बिना हमारी रोजमर्रा की जिंदगी है, उतना ही कष्टकारी हो चला है इनका जीवन। अकुशलता, कच्चे माल की कमी, उपयुक्त बाजार न मिलना और मशीनों से बने सामान से प्रतिस्पर्धा जैसे कारकों के चलते ये कारीगर और शिल्पकार आज लगभग हाशिये पर पहुंच गए हैं। इसी को ध्यान में रखते हुए योजना के पहले चरण में कारीगरों को प्रशिक्षण देने और फिर उन्हें अपना काम शुरू करने, उपकरण खरीदने के लिए पंद्रह हजार रुपए का अनुदान देने का प्रावधान है। प्रशिक्षण पूरा होने पर एक प्रमाण-पत्र मिलेगा, जिससे वे मान्यता प्राप्त शिल्पकार का दर्जा हासिल कर लेंगे। दूसरे चरण में उन्हें व्यवसाय शुरू करने के लिए पहले एक लाख और फिर दो लाख यानी कुल तीन लाख रुपए तक का ऋण दिया जाएगा। उसे प्रतिस्पर्धी बनाने, आज के युग के हिसाब से काम करने के लिए आधुनिक प्रौद्योगिकी का प्रशिक्षण भी दिया जाएगा। इस योजना से स्वाभाविक ही उम्मीद बनती है कि बहुत सारे अकुशल लोगों को भी स्वावलंबन की दिशा मिलेगी। हालांकि ऐसी योजनाएं सरकारें पहले भी लागू करती रही हैं, लेकिन वे बैंकों की ऋण प्रक्रिया और अफसरशाही का शिकार होकर कागजों तक सिमट कर रह जाती रही हैं। जरूरतमंद लोग बैंकों और अफसरों के चक्कर काटते रहते हैं, लेकिन उन्हें वाजिब लाभ नहीं मिल पाता। इस कारण उनकी जिंदगी में अपेक्षित बदलाव नहीं आ पाता। प्रधानमंत्री विश्वकर्मा योजना देश के लगभग तीस लाख परिवारों को ध्यान में रखकर लाई गई है। इसमें कारीगरों और शिल्पकारों के बनाए उत्पादों और सेवाओं के लिए वैश्विक खिड़की खोलना भी एक मकसद है। पांच साल में इस पर तेरह हजार करोड़ रुपए खर्च होंगे। अगर ईमानदारी से इस योजना को लागू किया गया तो यह कारीगरों-शिल्पकारों के लिए बड़ी उम्मीद की किरण कही जा सकती है, जो अपने गांव-घर में रहकर अपने परंपरागत पेशे के जरिए ही रोजी-रोटी कमाना चाहते हैं। मगर इस योजना की कामयाबी इस बात पर निर्भर करेगी कि ऐसे शिल्पकारों को बाजार कितना उपलब्ध हो पाता है।

दस लक्षण महापर्व द्वितीय दिवस 20 सितम्बर पर विशेष

विनम्रता की सीख देता है उत्तम मार्दव धर्म

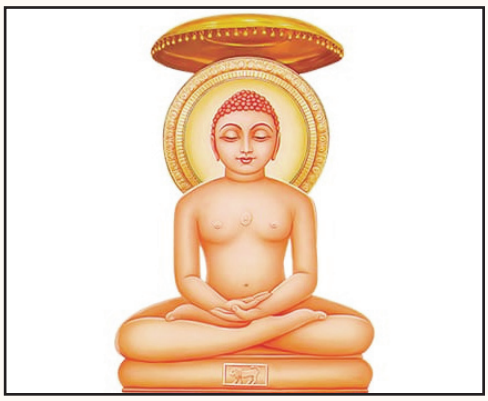

दसलक्षण महापर्व के क्रम में दूसरा है ''मार्दव धर्म'' और चार कषायों के क्रम में दूसरी है 'मान कषाय'। मृदुभाव आत्मा का स्वभाव हे, मृदुता आत्मा के सरल परिणाम को कहते हैं। जैसे कि-

मृदुत्वं सर्व भूतेषु कार्य जीवेन सर्वदा।
काठिन्यं त्यज्यते नित्यं धर्म बुद्धि विजानता।।

जो जीव धर्म बुद्धि को जानते हैं, ऐसे जीवों को उचित है कि समस्त जीवों में हमेशा मृदुभाव अर्थात्सरल भाव रखना चाहिए, कठोर भाव का त्याग करना चाहिए। मान के अभाव को मार्दव धर्म कहते हैं । सबसे विनम्र भाव से पेश आएं, सब प्राणियों के प्रति मैत्री भाव रखें । क्योंकि सभी प्राणियों को जीवन जीने का अधिकार है। मृदु परिणामी व्यक्ति कभी किसी का तिरस्कार नहीं करता और यह सृष्टि का नियम है कि यहाँ दूसरों का आदर देने वाला ही स्वयं आदर का पात्र बन सकता है। जैसे नशे में धुत व्यक्ति को कोई समझा नहीं सकता औरों की तो बात ही क्या उसके सगे-सम्बन्धी जन भी उसे समझाने में असमर्थ हैं, उसी प्रकार अभिमानी व्यक्ति को कोई समझा नहीं सकता। दसलक्षण पर्व की पूजन में पं. द्यानतराय जीनिम्न पंक्तियों में स्पष्ट कर रहे हैं -

मान महा-विष-रूप, करहि नीच गति जगत में।
कोमल सुधा अनूप, सुख पावे प्राणी सदा।।
उत्तम मार्दव गुण मन माना, मान करन को कौन ठिकाना?
बस्यो निगोद माँहि तें आया, दमड़ी रूंकन भाग बिकया।।
रूकन बिकाया भाग वशतें, देव इक-इंद्री भया।
उत्तम मुआ चांडाल हूवा, भूप कीड़ों में गया।।
जीतव्य जोवन धन गुमान, कहा करे जल-बुदबुदा।
करि विनय बहु-गुन बड़े जन की, ज्ञान का पावें उदा।।

अर्थात कविवर कहते हैं, मान महाविष रूप (हलाहल जहर) के समान है तथा नीच गति (नरक,तिर्यंच) का कारण है। कोमलता अर्थात मार्दव अमृत के समान है और उसको धारण करने वाला प्राणी निरंतर सुख ही पाता है। आगे,उत्तम मार्दव गुण मन में लाना चाहिये क्योंकि मान करने के लिए जगत में कोई भी वस्तु नहीं है। अनादिकाल से यह जीव (मैं) निगोद में रहा तथा वनस्पति-कायिक में जन्म लेने पर दमड़ी (कौड़ियों) के भाव बिका। मार्दव धर्म संसार का नाश करने वाला है, मान का मर्दन करने वाला है, दया धर्म का मूल है, सर्वजीवों का हितकारक है और गुण गणों में सारभूत है। इस मार्दव धर्म से ही सकल व्रत और संयम सफल होते हैं। मार्दव धर्म मान कषाय को दूर करता है, मार्दव धर्म पाँच इन्द्रिय और मन का निग्रह करता है। मद के 8 प्रकार आचार्यों ने बताएं हैं -

ज्ञानं पूजां कुलं जाति, वलमर्द्धि तपो वपुः ।
अष्ठा वाश्रित्य मानित्वं, स्मयमा दुर्गतस्मयाः ।।

1- ज्ञान का मद, 2 - पूजा/प्रतिष्ठा/ऐश्वर्य का मद, 3 - कुल का मद, 4 - जाति का मद, 5 - बल का मद, 6- ऋद्धि का मद, 7 - तप का मद और 8 - शरीर/रूप का मद। ये आठ मद , मान व्यक्ति को गर्त की ओर ले जाते हैं। जाति आदि मदों के आवेशवश होने वाले अभिमान का अभाव करना मार्दव है। मार्दव का अर्थ है मान का नाश करना। मृदु का भाव मार्दव है, यह मार्दव मानशत्रु का मर्दन करने वाला है, यह आठ प्रकार के मद से रहित है और चार प्रकार की विनय से संयुक्त है। मानव की सोई हुई अन्तः चेतना को जागृत करने, आध्यात्मिक ज्ञान के प्रचार, सामाजिक सद्भावना एवं सर्व धर्म समभाव के कथन को बल प्रदान करने के लिए पर्यूषण पर्व मनाया जाता है। साथ ही यह पर्व सिखाता है कि धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष आदि की प्राप्ति में ज्ञान व भक्ति के साथ सद्भावना का होना भी अनिवार्य है। जैन धर्म में दस दिवसीय पर्युषण पर्व एक ऐसा पर्व है जो उत्तम क्षमा से प्रारंभ होता है और क्षमा वाणी पर ही उसका समापन होता है। क्षमा वाणी शब्द का सीधा अर्थ है कि व्यक्ति और उसकी वाणी में क्रोध, बैर, अभिमान, कपट व लोभ न हो। मार्दव धर्म आप लोगों से पूछ रहा है कि हम अपने से नीचे वालों के प्रति कितना विनम्र हुए। दौलत को नहीं दिलों को भी जीतना सीखो। इस अहंकार से बचने के लिए जीवन में सरलता और सहजता को स्वीकार करो। मान महाविषरूप, करहि नीच-गति जगत में। कोमल सुधा अनूप, सुख पावै प्रानी सदा।। अर्थात मान आचार-विचार-रूपी बादलों को नष्ट करने के लिए वायु के समान है, विनय-रूपी जीवन का नाश करने के लिए विषधर सर्प के तुल्य है और कीर्ति रूपी कमलिनी को उखाड़ फेंकने के लिए गजराज के सदृश है।

डॉ. सुनील जैन संचय
ज्ञान-कुसुम भवन,नेशनल कान्वेंट स्कूल के सामने, गांधीनगर, नईबस्ती,ललितपुर 284403, उत्तर प्रदेश
मोबाइल, 9793821108
ईमेल- suneelsanchay@gmail.com
(आध्यात्मिक चिंतक व जैनदर्शन के अध्येता)

उत्तम मार्दव धर्म अर्थात विनयशीलता, कोमलता, मृदुता का भाव होना

अपनी बात समझाने के लिए विनयशील होना जरूरी, मृदुता से विनाशकारी युद्ध रोके जा सकते हैं...

जैन धर्म के दशलक्षण धर्म आत्मा के स्वाभाविक धर्म है । ये दस धर्म सार्थक जीवन जीने के अभिन्न अंग है । आज द्वितीय दिवस - उत्तम मार्दव धर्म दिवस है। मार्दव अर्थात विनयशील होना, मृदुता, कोमलता का भाव होना और मान, मद, अभिमान, अहंकार आदि दुर्गुणों का अभाव होना । किसी अहंकारी की तुलना मादक पदार्थ का सेवन करने वाले नशे में चूर व्यक्ति से से की जाती है। जैसे नशे में चूर व्यक्ति को कोई समझा नहीं सकता, औरों की तो बात ही क्या उसके सगे संबंधी जन भी उसे समझाने में असमर्थ होते हैं, उसी प्रकार प्रमादी, अभिमानी व्यक्ति को भी कोई समझा नहीं सकता। याद रखिए, जो विनयशील है उसका त्याग दान इत्यादि करना सफल है, फलदायक होता है लेकिन अभिमानी का सब निष्फल है ।अभिमानी के बिना अपराध किए ही सब लोग उसके दुश्मन हो जाते हैं, सभी लोग अभिमानी की निंदा करते हैं, उसके किसी भी दुखः में कोई साथ देना नहीं चाहता है और प्रतिपल उसका पतन होते देखना चाहते हैं। अभिमानी व्यक्ति अपनी किसी अनपेक्षित तात्कालिक उपलब्धि पर अपने आप को शक्तिशाली समझने लगता है । अहंकारवश उसके हित/अहित की बात भी उसे समझ में नहीं आती है । वह अपने झूठे मान के लिए छल- कपट करता है तथा वांछित परिणाम प्राप्त नहीं होने पर क्रोधित हो जाता है । मान कषाय यानी अभिमान के कारण जीव अकड़ में रहता है । सुविचार के अनुसार अकड़ निर्जीवता का लक्षण है। हरी-भरी डालियां अपने लचीलापन से आंधी तूफान सहन करने की क्षमता रखती है एवं अपने अस्तित्व बचाने के साथ विकसित होती रहती है, लेकिन सूखी डाली जो कड़क रहती है, जो तेज हवा, आंधी-तूफान सहन नहीं कर सकती है, उसकी नियति अंततः पेड़ से कटकर अलग होना ही है। इसी प्रकार अकड़ने वाला व्यक्ति समाज में, परिवार में, कहीं भी स्वीकार्य नहीं होता है । वैसे भी मृत शरीर ही अकड़ता है और ऐसे शरीर को मिट्टी में मिला दिया जाता है यानी उसका अस्तित्व समाप्त हो जाता है। तात्पर्य यह है कि जो व्यक्ति झुकना जानता है जिसमें परिस्थिति के अनुसार ढलने की क्षमता है, वही व्यक्ति आत्मा के सहज स्वाभाविक विनय- मार्दव धर्म की आराधना करता है एवं समझौता किए बिना अपना वर्चस्व कायम रख सकता है। अकसर धन, दौलत, शान और शौकत को ही मनुष्य अपना जीवन समझता है, जबकि ये सभी नाशवान है, क्षणभंगुर हैं ये सभी चीजें एक दिन सबको छोड देंगी या फिर एक दिन मजबूरन इन चीजों को छोडना ही पडेगा। अतः इन तुच्छ नाशवान चीजों के पीछे भागने से अच्छा है कि अभिमान और परिग्रह को छोडा जाये और सभी से विनम्र भाव से व्यवहार करें। सभी को एक न एक दिन जाना ही है, तो सबसे पहले स्वयं को पहचाने। मैं कौन हूं, यह जानने की कोशिश कर। मार्दव धर्म हमें स्वयं की सही वृत्ति को समझने का माध्यम है। उत्तम मार्दव विनय प्रकासै, नाना भेदज्ञान सब भासै। उत्तम मार्दव धर्म का पालन करने से विनयशीलता का भाव प्रकट होता है एवं विविध भेद ज्ञान समझ में आने लगते हैं। दशलक्षण धर्म के एक एक धर्म सम्पूर्ण है, प्रत्येक का अपना महत्व है। अपनाकर देखिए।

भागचंद जैन मित्रपुरा
अध्यक्ष,अखिल भारतीय जैन बैंकर्स फोरम, जयपुर।

जैन दस लक्षण धर्म विशेष

उत्तम मार्दव-करें मान का-मर्दन

विजय कुमार जैन राघौगढ़ (गुना)

जीवन के विकास के लिये अहं का विसर्जन अनिवार्य है। मार्दव धर्म हमें यही सन्देश देता है। मार्दव धर्म का अर्थ है - अहंकार का अभाव, विनम्रता का सद्भाव। आखिर ये अहंकार है क्या ? अहं करोमीति अहंकारः मैं कुछ करता हूँ यह भाव ही अहंकार है। आज हर व्यक्ति अपने आपको जगत का कर्ता मानकर चलता है। वह कर्तव्य, भोक्तृत्व और स्वामित्व की बुद्धि में जीता है। इस बुद्धि में ग्रसित होने के कारण वह जगत के सारे कार्यों को अपने ऊपर आरोपित कर लेता है। मेरे बिना कुछ हो ही नहीं सकता। बस यही अहंकार है। एक बार एक बैलगाड़ी चल रही थी उसके नीचे कुत्ता चल रहा था, बैलगाड़ी को बैल खींच रहे थे, मगर कुत्ता कह रहा था कि बैलगाड़ी को मैं ही खींच रहा हूँ। कुत्ता अपने अभिमान में फूल रहा था। अहंकारी व्यक्ति की कुछ ऐसी ही प्रकृति होती हैं। मैं ही सबको चलाता हूँ। मेरे बिना कुछ हो ही नहीं सकता। व्यक्ति सामान्य बनकर जीवन यापन पसंद नहीं करता, वह कुछ विशेष चाहता है। यही भाव अंहकार को जन्म देता है। आज आदमी अपने आपको मैं तक सीमित नहीं रखता। वह स्वयं को विशेषणों के साथ प्रस्तुत करता हैं। मैं धनी हूँ, मैं ज्ञानी हूँ, मैं नेता हूँ, मैं मंत्री हूँ, मैं अधिकारी हूँ, मेरी कार हैं, मेरा बंगला है, मेरी फेक्ट्री है, ऐश्वर्य है, पद है, प्रतिष्ठा है। सन्त कहते हैं, यह मैं और मेरापन ही जिसे अध्यात्म की भाषा में अहंकार और ममकार कहते हैं, जीवन में दुखों का सबसे बड़ा कारण है। आज हर आदमी अपने अहं की पुष्टि में पागल है। वह चाहता है कि दुनिया का सबसे बड़ा आदमी बन जाऊँ। सन्त कहते हैं बड़ा आदमी बनकर क्या करोगें ? भले आदमी बन जाओ तुम्हारा उद्धार हो जायेगा। आज जो बड़ा आदमी बनने की कोशिश में है, वह किसी पद और प्रतिष्ठा को पाने में लगा है। धन, वैभव, पद और प्रतिष्ठा ही आदमी के बड़ा होने के प्रतिमान बनकर रह गये हैं। जिसके पास जितना अधिक धन, वैभव, पद और प्रतिष्ठा हो दुनिया में वह उतना ही बड़ा आदमी माना जाता है। दुनिया की नजरों में वह भले ही बड़ा आदमी हो पर परमार्थतः नहीं। व्यक्ति को अहंकार या मद अनेक प्रकार का होता है। कुल/जाति मद, रूप मद, ऐश्वर्य मद, बल मद, ज्ञान मद, तप मद, धन मद में मदमस्तक होकर व्यक्ति सब कुछ स्वयं को ही मान रहा है। विश्व विजेता सिकन्दर जब इस दुनिया से विदा हुआ तो उसने पहले ही कह दिया था कि जब मेरा जनाजा निकले तो मेरे दोनों हाथ बाहर रखना ताकि यह दुनिया देख ले कि मैं खाली हाथ जा रहा हूँ। मैं-मैं की रटना लगाने वाले अनेक लोग इस दुनिया से चले गये, उसके बाद भी किसी का काम नहीं रूका। संसार

के जितने भी क्रियाकलाप है, सब अपने-अपने नियमों के अनुरूप होते रहते हैं। किसी के रोके कुछ रूकता नहीं और किसी के किये कुछ होता नहीं। हम एक-दूसरे के लिये निमित्त हो सकते हैं, पर कर्ता नहीं। अहंकार को त्यागने के लिये विश्व व्यवस्था में अपनी भूमिका को समझने की आवश्यकता है। जगत में जो कुछ भी घटित होता है, उसमें पूरी प्रकृति की भागीदारी है। हम तो उसके एक घटक मात्र है। घटक तो घटक होता है, कार्य का जनक नहीं। प्रत्येक घटक समान है इस समानता की प्रतीति ही मार्दव धर्म है। वस्तुतः धन, वैभव, पद-प्रतिष्ठा आदि जितने भी बाह्य संयोग है वे सभी नश्वर। क्षण-क्षयी आदि उन पर अहंकार करना हमारी अज्ञानता हैं बाह्य संयोगों पर अहंकार करने की अपेक्षा उन्हें क्षणिक जानकर आत्मा के शाश्वत स्वरूप का ध्यान करना चाहिये। आत्मसत्ता का भान होते ही अहंकार विगलित होने लगता है। मार्दव धर्म का मात्र यही संदेश है कि हम बाह्य संयोगों के प्रति बढ़ते हुए अभिमान को नष्ट करें, आत्मा के स्वरूप को समझें और जीवन में विनम्रता को विकसित करें।

नोटः-लेखक स्वतंत्र पत्रकार एवं भारतीय जैन मिलन के राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष है।

सीकर संभाग के संभागीय आयुक्त मोहन लाल यादव ने जैन समाज के साथ रोट तीज त्यौहार मनाया

सीकर. शाबाश इंडिया

जैन समाज के दस लक्षण पर्व के पूर्व रोट तीज का पर्व धूमधाम से मनाया इस अवसर पर दिगंबर जैन समाज के सभी घरों में तुरई की सब्जी, खीर,हलवा,दही का रायता आदि प्रमुख रूप से बनते हैं। इस अवसर पर दिगंबर जैन सोश्यल ग्रुप सीकर के कोषाध्यक्ष समाज सेवी हरीश बड़जात्या के आवास पर सीकर संभाग के संभागीय आयुक्त मोहन लाल यादव को आमंत्रित किया। इस अवसर पर जैन मित्र मंडल के पूर्व अध्यक्ष सुशील बड़जात्या,जैन वीर संगठन के कोषाध्यक्ष सुनील छाबड़ा(दुदवा वाला) ने माला पहनाकर स्वागत किया । कल्पना बड़जात्या, प्रवेश बड़जात्या, पायल बड़जात्या, अंकित मोदी आदि भी उपस्थित थे।

महामस्तकाभिषेक एवं शांतिधारा उत्साहपूर्वक की गई

प्रकाश पाटनी. शाबाश इंडिया

भीलवाड़ा। बापूनगर स्थित श्री पदम प्रभु दिगंबर जैन मंदिर में दस लक्षण पर्व के प्रथम दिन उत्तम क्षमा धर्म के दिन बड़े बाबा मूल नायक पदम प्रभु भगवान का महामस्तकाभिषेक एवं शांतिधारा उत्साहपूर्वक की गई। ट्रस्ट अध्यक्ष लक्ष्मीकांत जैन ने बताया कि सभी प्रतिमाओं पर अभिषेक करने के बाद ओमप्रकाश पाटनी एवं राजेश, मनोज पाटनी ने पदम प्रभु भगवान पर, ताराचंद झांझरी ने श्री आदिनाथ भगवान पर, गोवर्धन अग्रवाल ने श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान पर शांतिधारा की तथा अन्य प्रतिमाओं पर भी श्रावकों द्वारा शांतिधारा की गई। श्रीमती कल्पना सोगानी के निर्देशन में दश लक्षण पूजा में उत्तम क्षमा धर्म की पूजा- आराधना कर भक्ति भाव से अर्ग समर्पण किये। इस अवसर पर बड़ी संख्या में श्रावक श्राविकाएं उपस्थित थीं। रात्रि 7:00 बजे श्रीजी की महाआरती की गई। तथा पदम प्रभु महिला मंडल द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए गए।

।। श्री आदिनाथाय नमः ।।

श्री 1008 आदिनाथ भगवान

श्री 1008 आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर

537-बी, उदय पथ, विवेक विहार जयपुर

दशलक्षण धर्म महापर्व की महाआराधना

मंगलवार, 19 सितम्बर 2023 से गुरुवार, 28 सितम्बर 2023 तक

प्रतिदिन के मांगलिक कार्यक्रम

उत्तम क्षमा धर्म — प्रात: 6.00 बजे से : अभिषेक एवं शांतिधारा मूलनायक आदिनाथ भगवान

उत्तम मार्दव धर्म — प्रात: 7.15 बजे से : अभिषेक एवं शांतिधारा नीचे की वेदी में

उत्तम आर्जव धर्म — प्रात: 8.15 बजे से : (संगीत मय) सामुहिक पूजन

सांय: 7.15 बजे से : (संगीत मय) सामुहिक आरती

उत्तम शोच धर्म — साय: 8.00 बजे से : दशलक्षण धर्म पर वर्चा ब्र.पूर्णिमा दीदी द्वारा एवं प्रश्न मंच

उत्तम सत्य धर्म — साय: 8.30 बजे से : महिला मंडल द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम

मंगल सान्निध्य

ब्र.पूर्णिमा दीदी

ब्र.जया श्री दीदी

उत्तम संयम धर्म — उत्तम तप धर्म — उत्तम त्याग धर्म — उत्तम आकिंचन धर्म — उत्तम ब्रह्मचर्य

दस लक्षण महापर्व ध्वजा रोहण कर्ता परिवार

ध्वजा रोहण — प्रात : 9:15 बजे, मंगलवार 19 सितम्बर 2023

सुगन्ध धूप दशमी — रविवार, 24 सितम्बर 2023

अनंत चतुर्दशी — गुरुवार, 28 सितम्बर 2023

विश्वमैत्री क्षमावाणी पर्व — शनिवार, 30 सितम्बर 2023

वात्सल्य भोजन — शनिवार, 30 सितम्बर 2023

मुकेश जी - मंजू जी, गौरव जी - कलिका जी
एकाग्र, दितवी एवं समस्त सोगानी परिवार

सुगंध धूप दशमी के दिन मंदिर प्रांगण में भव्य झांकी का आयोजन किया जाएगा।

रविवार के दिन भगवान पारसनाथ की प्रतिमा पर ऋद्धिमंत्रों के द्वारा 108 छोटे कलशो से अभिषेक कराये जाएंगे।

अनंत चतुर्दशी के मुख्य कलशाभिषेक की प्रक्रिया शाम 4:30 बजे शुरु हो जाएगी।

शनिवार, 30 सितम्बर, 2023 क्षमावाणी के दिन पंचामृत अभिषेक की प्रक्रिया दोपहर 3:30 बजे शुरु हो जाएगी

सपरिवार पधारकर पुण्यार्जन करें

संगीतकार
संजय जैन (लाडनूं)

निवेदक : सकल दिगम्बर जैन समाज, विवेक विहार, जयपुर

अध्यक्ष — अनिल जैन (IRS)

सचिव — सुरेन्द्र कुमार पाटनी

उपाध्यक्ष — अरुण रावंका, भागचन्द पाटनी

सहसचिव — नरेश जैन मेड़ता

कोषाध्यक्ष — पारस छाबड़ा

सहकोषाध्यक्ष — नीरज ठोलिया

समस्त कार्यकारिणी सदस्य

सहसचिव संयोजक पर्युषण पर्व दीपक सेठी

महिला मण्डल, विवेक विहार दिगम्बर जैन समाज

अध्यक्ष — सरला बगड़ा

मंत्री — अलका पांड्या

कोषाध्यक्ष — सुनीता कासलीवाल

समस्त कार्यकारिणी सदस्य, महिला मण्डल

सम्पर्क सूत्र : 9829294340, 8949588453, 9414305411, 8209012630, 9509493840

क्या घर पर शुगर जांच करने और लैब में शुगर जांच कराने में कोई अन्तर होता है?

डॉ पीयूष त्रिवेदी
आयुर्वेदाचार्य
चिकित्साधिकारी राजकीय आयुर्वेद चिकित्सालय राजस्थान विधानसभा,जयपुर।

जी हां, घर पर शुगर जांच करने और लैब में शुगर जांच कराने में कुछ अंतर होते हैं। ये अंतर निम्नलिखित हो सकते हैं: **तरीका:** घर पर शुगर जांच करने के लिए आप अक्सर ग्लाइकोमीटर नामक डिवाइस का उपयोग करते हैं, जबकि लैब में शुगर जांच कराने के लिए एक नमूना लेने के बाद आपका नमूना विशेष उपकरणों के साथ परीक्षित किया जाता है। **प्रामाणिकता:** लैब में शुगर जांच कराने का परिणाम अक्सर घर पर किए गए जांच के मुकाबले अधिक प्रामाणिक माना जाता है, क्योंकि यहां परीक्षण का प्रयोगी उपकरणों और विशेषज्ञता का संयोजन होता है। **नमूना:** घर पर शुगर जांच के लिए आप अक्सर उंगली के छुआए गए खून का नमूना लेते हैं, जबकि लैब में शुगर जांच कराने के लिए आपके ब्रदर नमूना लेने में विशेषज्ञता रखते हैं, जिससे परीक्षण की ज्यादा सटीकता होती है। **समय:** घर पर शुगर जांच करने के लिए तुरंत परिणाम प्राप्त कर सकते हैं, जबकि लैब में परीक्षण के परिणाम को प्राप्त करने में थोड़ा समय लग सकता है, क्योंकि नमूना लेने और टेस्टिंग के लिए नमूना को लैब भेजने का प्रक्रिया होता है। इन अंतरों के बावजूद, घर पर शुगर जांच करना आपको अपने शुगर के स्तर का संवेदनशीलता प्रदान कर सकता है, जबकि लैब में शुगर जांच कराना आपको अधिक सटीक परिणाम प्रदान कर सकता है। आपके चिकित्सक के साथ मिलकर आपको सबसे उपयुक्त जांच का चयन करना चाहिए।

श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर
कीर्ति नगर, जयपुर

दसलक्षण महापर्व
जिन धर्म अंताक्षरी
(अंताक्षरी फेम:- श्रीमति समता गोदिका)
प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए सभी महिलाएँ, पुरुष, बच्चे आमंत्रित है।

बुधवार 20 सितम्बर 2023
समय सांय 08:00 बजे
स्थान: जैन भवन, कीर्ति नगर मंदिर,जयपुर

संयोजक
श्री महेन्द्र गिरधरवाल
श्री मनीष लोंग्या

कार्यक्रम संयोजक
श्रीमती रचना बिलाला
श्रीमती मीनू गिरधरवाल

टीकम चन्द बिलाला (अध्यक्ष)
जगदीश जैन (महामंत्री)
सुरेन्द्र कुमार जैन (कोषाध्यक्ष)

एवम समस्त कार्यकरिणी सदस्य
कीर्ति नगर जैन मंदिर जयपुर

सीकर में 20 से 28 सितंबर तक श्री लक्ष्मीगोपुष्टि महायज्ञ का होगा आयोजन

सीकर. शाबाश इंडिया

शेखावाटी में पहली बार होगा भव्य श्री लक्ष्मी गोपुष्टि महायज्ञ। अधिवक्ता समाजसेवी हनुमान सिंह पालवास ने बताया कि श्री लक्ष्मी गोपुष्टि महायज्ञ और यज्ञशाला में होगा गौ मंडप तथा श्रीलक्ष्मी गौपुष्टि महायज्ञ में हर दिन होगी 11 हजार रूद्राक्ष पूजा। वैदिक यज्ञशाला के साथ जीवंत गौ माता की सेवा के साथ गौ मंडप में गाय के दूध व घी की महत्वता बताते संदेश। सेवा व गाय की महिमा से रोग निवारण की जानकारी प्रदान करने का दृश्य। रामलीला मैदान में 20 सितम्बर से शुरू होने वाले श्री लक्ष्मी गौ पुष्टि महायज्ञ में नजर आने वाला है। श्री लक्ष्मी गोपुष्टि महायज्ञ आयोजन समिति के संयोजक शंकर भारती ने बताया कि उक्त कार्यक्रम श्री करणी गोपाल गौ धाम पालवास के पीठाधीश्वर श्रद्धेय चन्द्रमादास महाराज के नेतृत्व एवं देश के प्रमुख संतों के सानिध्य में होगा। भारती ने बताया कि गौपुष्टि महायज्ञ के दौरान अखिल वल्लभ भारतवर्ष के राष्ट्रभर के 100 से अधिक गौपालक संतो का सानिध्य व मार्गदर्शन भी मिलेगा। शेखावाटी में गौसेवा को लेकर प्रमुख संतों का संत सम्मेलन भी पहली बार होगा। संत चन्द्रमादास ने बताया कि बउधाम के संत शिरोमणी रतिनाथ महाराज व रामजी बापू की पूण्य स्मृति में होने वाले इस महायज्ञ की सबसे बड़ी खासियत 51 सौ महिलाओं के द्वारा एक साथ निकाली जाने वाली गौ कलश यात्रा होगी।

आपके विचार

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक राकेश जैन गोदिका द्वारा प्रकाशित दैनिक-ईपेपर 'शाबाश इंडिया' आम पाठक और समाज में जागरूकता फैलाने में सेतू का काम कर रहा है। आप अपने क्षेत्र के समाचार, आलेख, विचार आदि ई-मेल कर सकते हैं या निम्न नंबरों पर वाट्सअप कर सकते हैं।

सम्पादक: राकेश जैन गोदिका
@ 94140 78380, 92140 78380

दैनिक ई-पेपर
शाबाश इंडिया
shabaasindia@gmail.com
weeklyshabaas@gmail.com

देवीपुरा जैन मंदिर

नया जैन मंदिर

बड़ा जैन मंदिर

उत्तम क्षमा धर्म की पूजा के साथ 10 दिवसीय दसलक्षण महापर्व आरंभ

जैन मंदिरों में हो रहे हैं विशेष धार्मिक आयोजन

वी के पाटोदी. शाबाश इंडिया

सीकर। दिगंबर जैन समाज के 10 दिवसीय दसलक्षण पर्व मंगलवार को उत्तम क्षमा धर्म के साथ शुरू हुआ । ये पर्व 28 सितंबर तक चलेगा व अनंत चतुर्दशी पर दस दिवसीय महापर्व का समापन होगा । 30 सितंबर को क्षमावाणी का पर्व मनाया जाएगा। प्रवक्ता विवेक पाटोदी ने बताया कि शहर के समस्त जिनालयों में दसलक्षण पर्व भक्ति भाव से मनाया जा रहा है। पर्व के लिए शहर के मंदिरों को आकर्षक ढंग से सजाया गया है । जैन समाज जन इस आत्मशुद्धि के महापर्व पर शुभ और अशुभ कर्मों का प्रक्षालन करने के लिए मन के दूषित भावों और विकारों को दूर करने के लिए पर्व को बेहद श्रद्धा के साथ मना रहे हैं। पहले दिन उत्तम क्षमा धर्म का पालन करते हुए श्रावकों ने नियम पूर्वक व्रत रखा व जिनालयों में प्रातः बेला में जिनेन्द्र भगवान के अभिषेक किए ।इसके पश्चात नित्य नियम की पूजा व दस लक्षण धर्म की पूजा हुई। देवीपुरा स्थित चंद्रप्रभु जैन मंदिर में भी दसलक्षण पर्व भक्तिभाव से मनाया जा रहा है। कमेटी के अध्यक्ष पदम पिराका व उपाध्यक्ष प्रदीप सेसम में बताया कि मंगलवार को सौधर्म इंद्र बन शांतिधारा व महाआरती का सौभाग्य नेमीचंद तेजपाल छाबड़ा दुधवा परिवार को प्राप्त हुआ । दीवान जी की नसियां के सुनील दीवान ने बताया कि प्रातः काल ब्रह्मचारिणी सरिता दीदी व बबिता दीदी के सानिध्य में भक्तिभाव से श्री जी के अभिषेक व शांतिधारा की गई । नया मंदिर कमेटी के मंत्री पवन छाबड़ा ने बताया कि प्रातः शांतिधारा का सौभाग्य मुकेश कुमार विकास कुमार लुहाड़िया सुरेरा वाले परिवार को मिला । समस्त मांगलिक कार्य पंडित जयंत शास्त्री के निर्देशन में संपन्न हुए। जाट बाजार स्थित नसियां जी में ब्रह्मचारिणी सरिता दीदी व बबिता दीदी ने उत्तम क्षमा धर्म पर बताया कि दसलक्षण अर्थात पर्युषण महापर्व आत्मशुद्धि का अवसर प्रदान करता है। इसलिए इस दौरान अहिंसा यानी किसी को दुःख व कष्ट ना देना, सत्य के मार्ग पर चलना, चोरी ना करना, ब्रह्मचर्य का पालन करना ही जैन धर्म के सिद्धांतों को रेखांकित करता है।

दीवान जी की नसियां

उत्तम क्षमा अर्थ का अर्थः सबको क्षमा, सबसे क्षमाः उत्तम क्षमा धर्म हमारी आत्मा को सही राह खोजने में और क्षमा को जीवन और व्यवहार में लाना सिखाता है। जिससे सम्यक दर्शन प्राप्त होता है। सम्यक दर्शन वो चीज है, जो आत्मा को कठोर तप त्याग की कुछ समय की यातना सहन करके परम आनंद मोक्ष को पाने का प्रथम मार्ग है।

क्रोध से होने वाली हानियों से बचाता है उत्तम क्षमा धर्म : गुरु मां विज्ञाश्री माताजी

गुंसी, निवाई. शाबाश इंडिया। श्री दिगम्बर जैन सहस्त्रकूट विज्ञातीर्थ गुन्सी के तत्वावधान में दस लक्षण पर्व के शुभ अवसर पर प्रथम दिन श्री दशलक्षण महामण्डल विधान के अंतर्गत उत्तम क्षमा धर्म की पूजन कराने का सौभाग्य महेश मोटूका वाले निवाई वालों को प्राप्त हुआ । गणिनी आर्यिका विज्ञाश्री माताजी के मुखारविंद से वृहद शान्तिधारा कराने का सौभाग्य णमोकार जैन जयपुर , सुनील भानजा निवाई , राजेश बनेठा वाले निवाई वालों को प्राप्त हुआ । गुरु भक्तों द्वारा गुरु माँ के पाद - प्रक्षालन , शास्त्र भेंट का कार्यक्रम हुआ । मंडल पर 14 अर्घ्य चढ़ाकर शांतिनाथ भगवान की संगीतमय पूजन की गई । तत्पश्चात मंगल आरती उतारी गई। माताजी ने प्रवचन सभा मे उपस्थित श्रद्धालुओं को समझाते हुए कहा कि - क्रोध की अग्नि को शांत करने के लिए क्षमा रूपी जल का सिंचन करना होगा । क्रोधी व्यक्ति को कोई पसन्द नहीं करता। क्रोध इंसान के रिश्तों को तोड़ने का काम करता है । एक बार के क्रोध करने से 24 घंटे की आयु नष्ट होती है । माइग्रेन, हाई ब्लड प्रेशर, हार्ट अटैक जैसी बीमारियां घेर लेती है। अतः मनुष्य को समझदारी से काम लेना चाहिए। प्रत्येक जीवों पर क्षमा भाव धारण कर क्रोध को नियंत्रण में लाना ही क्षमा धर्म का उद्देश्य है।

उत्तम क्षमा धर्म एवं कल्पद्रुम महामण्डल विधान की विशेष महाआराधना का आयोजन

विमल जोला. शाबाश इंडिया

निवाई। सकल दिगम्बर जैन समाज एवं जैन मुनि शुद्ध सागर महाराज के सानिध्य में बिचला जैन मंदिर पर दस लक्षण महापर्व एवं दस दिवसीय दशलक्षण धर्म पर्व के तहत कल्पद्रुम महामण्डल अनुष्ठान का गाजे बाजे से शुभारंभ किया गया जिसमें सोधर्म इंद्र एवं सभी इंद्र इन्द्राणियो ने श्री जी को गाजे बाजे से विराजमान किया गया। चातुर्मास कमेटी के प्रवक्ता विमल जौंला ने बताया कि कार्यक्रम से पूर्व विधानाचार्य पण्डित सुरेश कुमार शास्त्री के मंत्रोच्चार द्वारा मूलनायक भगवान शांतिनाथ एवं सुपार्श्वनाथ जी के साथ अनन्तनाथ भगवान चंद्र प्रभु भगवान पार्श्वनाथ भगवान सहित चारों दिशाओं में विराजमान सभी तीर्थंकरों के क्षीरसागर के जल से अभिषेक कर शांतिधारा की। जौंला ने बताया कि अनुष्ठान कार्यक्रम में सोधर्म इन्द्र महावीर प्रसाद शकुन्तला जैन छाबड़ा , धनपति कुबेर इंद्र त्रिलोक जैन प्रियंका जैन सिरस, चक्रवर्ती हेमचंद संधी, यज्ञनायक पारसमल सांवलिया, ईशान इंद्र हुकम चंद जैन गोधा ईसरदा, सानतकुमार इंद्र पुनित जैन खुशबू संधी, ध्वजारोहणकर्ता सुरेश कुमार सुनीता जैन सांवलिया, दीप प्रज्वलनकर्ता महावीर प्रसाद मिनी जैन नैनवां, पदमचंद पराणा, दिनेश सोगानी, सहित सभी इंद्र इन्द्राणियो ने मण्डप पर श्री फल अर्घ्य चढ़ाकर पूजा अर्चना करने का सौभाग्य मिला।विधान मण्डल में संगीतकार कैलाश एण्ड पार्टी ने मधुर भजनों की प्रस्तुतियां दी। जौंला ने बताया कि कार्यक्रम से पूर्व अनुष्ठान मे सौभाग्यशाली महिलाओं द्वारा अंकुरारोपण किया गया एवं विधानाचार्य पण्डित सुरेश कुमार शास्त्री की अगुवाई में चारों दिशाओं में पूजार्थियो मण्डल पर ने जैन धर्म की स्वस्तिक ध्वजाएं लगवाई गई तथा पांच मंगल कलशों की स्थापना हुई। महापर्व के तहत विधान अनुष्ठान में आचार्य निमंत्रण किया गया जिसमें विधानाचार्य पण्डित सुरेश कुमार शास्त्री का समाज द्वारा राजस्थानी परम्परा अनुसार स्वागत अभिनन्दन किया गया। मंगलवार को उत्तम क्षमा धर्म की पूजा अर्चना के साथ कल्पद्रुम महामण्डल विधान की विशेष पूजा अर्चना की गई।

चंडीगढ़ विश्वविद्यालय ने राजीव गांधी उन्नत प्रौद्योगिकी केंद्र (R-CAT) के साथ समझौता (MoU) पर हस्ताक्षर किए

जयपुर

आज चंडीगढ़ विश्वविद्यालय ने राजीव गांधी उन्नत प्रौद्योगिकी केंद्र (R-CAT) के साथ मिलकर समझौता (MoU) पर हस्ताक्षर किए। इस महत्वपूर्ण समारोह में इंदरजीत सिंह, कमिश्नर, डीओआईटी और सी, राजस्थान सरकार (भारत), सुश्री ज्योति लुहाड़िया, कार्यकारी निदेशक, R-CAT, और सुश्री विनिता श्रीवास्तवा (संयुक्त निदेशक), R-CAT, संजीव जैन निदेशक चंडीगढ़ यूनिवर्सिटी, डॉ ऋषि प्रकाश शुक्ल संयुक्त निदेशक, आशीष श्रीवास्तव संयुक्त निदेशक और डीओआईटी और सी, भारत सरकार के अधिकारी और विभिन्न आईटी कंपनियों जैसे SAS, Apple, Oracle, Red Hat, Adobe आदि के वरिष्ठ स्तर के अधिकारी शामिल हुए। इस आयोजन की शुरुआत इंदरजीत सिंह, कमिश्नर, डीओआईटी और सी, राजस्थान सरकार (भारत) द्वारा की गई, और उन्होंने R-CAT के मूल उद्देश्य को बताया. चंडीगढ़ विश्वविद्यालय, जो एशिया प्रशांत क्षेत्र में प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय है, युवाओं के लिए तकनिकी कौशल आधारित प्रशिक्षण को प्रोत्साहित करने के लिए R-CAT के साथ MoU पर हस्ताक्षर किये। R-CAT और चंडीगढ़ विश्वविद्यालय मिलकर काम करेंगे ताकि विज्ञान/इंजीनियरिंग/प्रौद्योगिकी छात्रों, युवाओं, और मध्य कार्यकारी पेशेवरों की क्षमता, रोज़गारी, और गतिविधि को बढ़ावा मिले और ये सभी राजस्थान, भारत, और दुनिया के विकसित और उभरते तकनीकी उद्योगों को आगे बढ़ाने में मदद करे मिस्टर संजीव जैन, संचालक चंडीगढ़ विश्वविद्यालय ने युवाओं के विकास के लिए R-कैट के योगदान को सराहा और इसे सरकार की एक दूरगामी सोच बताया। इस समारोह को सुश्री ज्योति लुहाड़िया, कार्यकारी

निदेशक, R-CAT द्वारा भी संबोधित किया गया, जिन्होंने R-CAT की यात्रा और उपलब्धियों को साझा किया। संजीव जैन ने कहा है कि चंडीगढ़ विश्वविद्यालय और R-CAT मिलकर दुनिया के लिए नया मानक तय करेंगे।यह समझौता राजस्थान के युवाओं के लिए एक नई दिशा की ओर एक महत्वपूर्ण कदम है, और चंडीगढ़ विश्वविद्यालय इसमें एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

जनकपुरी में हो रहा स्वस्ति भूषण माताजी रचित दस लक्षण विधान

आत्मा को जागृत करने का अवसर होता है पर्व: आर्यिका विशेष मति

जयपुर. शाबाश इंडिया

जनकपुरी ज्योतिनगर जैन मंदिर में मंगलवार से बालयोगिनी आर्यिका विशेष मति माताजी के सानिध्य में दस लक्षण महापर्व महोत्सव भक्ति भाव के साथ शुरू हुआ ।प्रबन्ध समिति अध्यक्ष पदम जैन बिलाला ने बताया कि प्रातः भगवान आदिनाथ की अष्ट धातु की प्रतिमा को विधान मण्डल पाण्डुशीला पर विराजित कर मंगल भावनाओं के साथ विश्व शान्ति हेतु बीजाक्षर युक्त शान्तिधारा आर्यिका श्री द्वारा बोली गई ।शान्तिधारा करने का सोभाग्य सुनील अलका सेठी लवकुश नगर परिवार को मिला । इसके बाद जहाजपुर प्रणेत्री गणिनी आर्यिका स्वस्ति भूषण माताजी रचित दसलक्षण विधान पूजन शिखर चन्द किरण जैन द्वारा साज बाज के साथ कराया गया ।जनकपुरी में चावल से बहुत ही सुंदर रंगीन कलात्मक विधान मण्डल तैयार किया गया है ।इस मध्य बालयोगिनी आर्यिका विशेष मति माताजी ने अपने प्रवचन में कहा की सभी को एक बार फिर अवसर मिला है स्वयं को जानने का । दुनिया को जानने से कोई लाभ नहीं होगा ।पर्व का अर्थ होता है स्वयं की आत्मा को जागृत करने का अवसर और इस दस लक्षण पर्व में भी नर से नारायण बनकर चारों और से आत्मा को जागृत कर धर्म मय बनाये । आर्यिका श्री ने आज के क्षमा धर्म के बारे में कहाँ की क्षमा को विवेक सहित पालन करे तथा पहले क्षमा के भाव को समझे ।दिन में तत्वार्थ सूत्र का वाचन हुआ तथा शाम को आर्यिका श्री ने सामायिक करायी जिसके बाद आरती व रिद्धि मन्त्र युक्त ध्यान का आयोजन हुआ ।

दिगम्बर जैन समाज बापू नगर सम्भाग

एक शाम आचार्य श्री के नाम

भजन संध्या

युवा भजन सम्राट श्री रूपेश जैन, इन्दौर

शनिवार 23 सितम्बर, 2023

रात्रि 7.30 बजे

स्थान : पार्श्वनाथ पार्क
श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन चैत्यालय,
गणेश मार्ग, बापू नगर, जयपुर

मुख्य अतिथि : श्री सुधान्शु जी - ऋतु जी कासलीवाल

दीप प्रज्ज्वलनकर्त्ता : श्री अतुल जी - शशी जी सौगानी

उमरावमल संघी
अध्यक्ष

ज्ञानचन्द झांझरी — उपाध्यक्ष
डॉ. राजेन्द्र कुमार जैन — मानद् मंत्री
निर्मल कुमार संघी — संयुक्त मंत्री
वी.के.जैन — कोषाध्यक्ष
राजेश बड़जात्या — मुख्य संयोजक
सुरेन्द्र कुमार मोदी — मुख्य संयोजक

... आप सादर आमंत्रित हैं ...

दशलक्षण महापर्व समारोह समिति

ताराचन्द पाटनी — अध्यक्ष
जितेन्द्र कुमार जैन — मंत्री

राजकुमार सेठी — उपाध्यक्ष
राजीव जैन गाजियाबाद — कार्याध्यक्ष
महावीर कुमार जैन झांगवाले — संयुक्त मंत्री
सुरेन्द्र कुमार मोदी — कोषाध्यक्ष

कार्यकारिणी सदस्यगण... विजय दीवान • विनय कुमार छाबड़ा • शान्ति लाल गंगवाल • सुभाष पाटनी • सतीश बाकलीवाल

एवं समस्त प्रबन्ध कार्यकारिणी समिति, श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन चैत्यालय,गणेश मार्ग, बापू नगर, जयपुर

संजय पाटनी • रमेश बोहरा • मनोज झांझरी • राजेश बड़जात्या • रवि सेठी • श्रीमती सुरीला सेठी • धर्मेन्द्र लुहाड़िया • सतीश गोधा
राजकुमार जैन • शैलेन्द्र गोधा 'समाचार जगत' • श्रीमती सीमा जैन गाजियाबाद • श्रीमती ममता पाटनी
श्रीमती दीपाली संघी • श्रीमती ज्योत्सना काला • श्रीमती प्रीति झांझरी • श्रीमती अनामिका कटारिया • श्रीमती कीर्ति मोदी

94140-54571 / 93145-07553 / 93527-22022

उत्तम क्षमा धर्म के साथ दिगंबर जैन समाज के दश लक्षण महापर्व का शुभारंभ

30वां श्रावक संस्कार शिविर का भव्य शुभारंभ

शुभम जैन. शाबाश इंडिया

आगरा। उत्तम क्षमा धर्म के साथ मंगलवार को दिगंबर जैन समाज का दशलक्षण महापर्व का शुभारंभ हुआ जैन मंदिरों को भव्य सजाया गया जैन मुनियों के मंगल प्रवचन के साथ अन्य धार्मिक में सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए। 30 वा श्रावक संस्कार शिविर का भव्य शुभारंभ हुआ। जिसमें बच्चों एवं युवाओं और बड़ों को दस दिन तक प्रशिक्षण दिया जाएगा। महापर्व के पहले दिन आगरा के हरीपर्वत स्थित श्री 1008 शांतिनाथ दिगंबर जैन मंदिर के अमृत सुधा सभागार में दशलक्षण महापर्व के साथ सभी 3350 शिविरार्थी का संस्कार पूजन एवं धार्मिक शिविर भी शुरू हो गया है । निर्यापक मुनिपुंगव श्री सुधा सागर जी महाराज एवं क्षुल्लक श्री गंभीर सागर जी महाराज ससंघ के मंगल सानिध्य एवं बाल ब्रह्मचारी प्रदीप जैन सुयश भैया जी एवं विनोद भैया जी, दिनेश गंगवाल , हुकम काका के निर्देशन में उत्तम क्षमा धर्म पर सभी शिविरार्थी ने सुबह 5:00 बजे से ध्यान एवं सुबहः 6:00 बजे से श्रीजी का अभिषेक और शांतिधारा एवं संगीतमय में दशलक्षण पूजन किया। इसके बाद मुनि श्री सुधासागर जी महाराज ने धर्मसभा को संबोधित करते हुए उत्तम क्षमा धर्म के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए कहा की आज के दिन आपके सामने आपका सबसे बड़ा दुश्मन आ जाए तो उसे क्षमा कर देना। गुरुवर ने कहा की दश लक्षण धर्मों में सबसे कठिन धर्म उत्तम क्षमा धर्म है। शाम को 6:00 से मुनिश्री का जिज्ञासा समाधान कार्यक्रम हुआ,वही संगीतमय मुनिश्री एवं श्रीजी की मंगल आरती की गई। धर्मसभा का संचालन मनोज जैन बाकलीवाल द्वारा किया। मीडिया प्रभारी शुभम जैन के मुताबिक बुधवार को दशलक्षण महापर्व के दूसरे दिन मुनिपुंगव श्री सुधासागर जी महाराज के सानिध्य में उत्तम मार्दव धर्म की पूजन होगी। इस अवसर पर प्रदीप जैन पीएसी जगदीश प्रसाद जैन,नीरज जैन जिनवाणी,निर्मल मोठया,राकेश सेठी, हीरालाल बैनाड़ा,पन्नालाल बैनाड़ा, अमित जैन बॉबी,अनिल जैन नरेश जैन,मीडिया प्रभारी शुभम जैन,राहुल जैन,बीना बैनाड़ा,उमा मोठया,उषा मोठया,समस्त आगरा सकल जैन समाज के लोग बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। वही श्री 1008 पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर ओल्ड ईदगाह कॉलोनी में दशलक्षण महापर्व के पहले दिन उत्तम क्षमा धर्म पर गणिनी आर्यिका श्री आर्षमति माता जी के मंगल सानिध्य एवं पंडित राजेश जैन भैया जी के निर्देशन

में दशलक्षण पर्व का पहला दिन उत्तम क्षमा धर्म की आराधना के रुप में मनाया गया। प्रातः 7:00 बजे से पंडित राजेश जैन के निर्देशन में मंत्रोचार के साथ भगवान पार्श्वनाथ का अभिषेक एवं शांतिधारा पूजन हुई,साथ ही गुरु मां ने उत्तम क्षमा धर्म के बारे में बताया कि क्षमा से व्यक्ति को इस लोक के साथ अगले लोक में सुख मिलता है। जीवन के हर कार्य के साथ क्षमा होना आवश्यक है, तभी वह अपने आप को संकट से बचा सकता है। उन्होंने बताया कि पर्युषण पर्व आत्मशुद्धि का अवसर प्रदान करता है। इसलिए इस दौरान अहिंसा यानी किसी को दुख,कष्ट ना देना,सत्य के मार्ग पर चलना,चोरी ना करना, ब्रह्मचर्य का पालन करना ही जैन धर्म के सिद्धांतों को रेखांकित करता है। सायःकाल 7:00 बजे से मंदिर में श्रीजी की मंगल आरती एवं महिला मंडल द्वारा बहुरूपी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

चौमूं में दस लक्षण महापर्व पर विभिन्न कार्यक्रम होंगे आयोजित

चौमूं. शाबाश इंडिया

शहर में चंद्रप्रभु शांतिनाथ पारसनाथ दिगंबर जैन मंदिर जी में सकल जैन समाज द्वारा दस लक्षण महापर्व के दौरान प्रथम दिवस पर प्रातः कालीन अभिषेक शांति धारा उत्तम क्षमा धर्म की पूजन की गई। जैन समाज प्रवक्ता पंकज बड़जात्या ने बताया कि यह सभी कार्यक्रम सकल दिगंबर जैन समाज के तत्वावधान में हो रहे हैं। आज की शांति धारा एवं अभिषेक करने का सौभाग्य नरेश कुमार नितेश कुमार नवीन कुमार पहाड़िया को प्राप्त हुआ। जैन समाज मंत्री राजेंद्र पाटनी ने बताया कि अगर जीवन में जीना है तो अहिंसा मार्ग अपनाओ अहिंसा का सबसे बड़ा गहना क्षमा है। क्षमा धर्म की नीव है । क्षमा शब्द दुश्मन को भी दोस्त बना देता है जियो और जीने दो का संदेश देता है आयोजक हीरालाल सुनील जैन के सानिध्य में सायकालः आरती भजन नवकार एवं जैन भजन हाऊ जी के कार्यक्रम संपन्न हुए। इन सभी कार्यक्रमों के दौरान जैन समाज अध्यक्ष राजेंद्र जैन समाजसेवी धर्मचंद चौधरी धन कुमार जैन नेमीचंद निहालचंद चौधरी पदमचंद जैन जयकुमार शकुंतला देवी छाबड़ा शांति देवी जैन महिला मंडल अध्यक्ष सुमन देवी पहाड़िया रविता जैन इत्यादि श्रावक मौजूद थे ।

दस लक्षण महापर्व के अंतर्गत 10 दिवसीय सहस्त्रनाम जिन शासन विधान हुआ शुरू

फागी. शाबाश इंडिया। कस्बे में पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में पावन चातुर्मास 2023 के अन्तर्गत आर्यिका श्रुतमति माताजी, आर्यिका सुबोध मति माताजी ससंघ धर्म की भव्य प्रभावना बढ़ा रही है, जैन महासभा के प्रतिनिधि राजाबाबू गोधा अवगत कराया कि दसलक्षण महामहोत्सव के अन्तर्गत आर्यिका संघ के पावन सानिध्य में आज 10 दिवसीय सहस्त्रनाम जिन शासन विधान का भव्य शुभारम्भ हुआ, कार्यक्रम में पारस कुमार, राजकुमार मित्तल नला वाले परिवार जनों ने बोली के माध्यम से उक्त विधान का पुण्यार्जन प्राप्त किया। गोधा ने अवगत कराया उक्त विधान स्थानीय भैया मनीष गोधा लदाना के दिशा निर्देश में विभिन्न मंत्रोंचरणों के बीच सम्पन्न हुआ जिसमें श्री फलों से सौ अर्घ्य चढ़ाए गए। इसी कार्यक्रम में दसलक्षण विधान की भी पूजा अर्चना की गई तथा 51 पूज्यार्थियों ने पूजा अर्चना कर पुण्यार्जन प्राप्त किया ,दोपहर में जिनवाणी पूजन, तत्वार्थ सूत्र के प्रत्येक अध्याय का वाचन किया गया बाद में आर्यिका सुबोधमति माताजी ने अपने मंगलमय उद्बोधन में श्रावकों को उत्तम क्षमा धर्म के बारे में बताया गया कि प्रतिकूल व्यवहार होने पर मन में कलुषिता न आने देना उत्तम क्षमा धर्म है। उत्तम क्षमा को धारण करने से जीवन की समस्त कुटिलताएं समाप्त हो जाती है तथा मानव का समस्त प्राणी जगत से एक अनन्य मैत्री भाव जागृत हो जाता है। उक्त कार्यक्रम में समाज के वयोवृद्ध का कपूर चंद जैन मांदी वाले, सोहनलाल झंडा, केलास कलवाड़ा , हरकचंद पीपलू,रतनलाल नला, शिखर मोदी,महेंद्र बावड़ी, सुरेंद्र पंसारी,चातुर्मास समिति के अध्यक्ष अनिल कठमाणा, राजकुमार मांदी,सुशील कलवाड़ा, विरेन्द्र नला, कमलेश चोधरी, कमलेश सिंघल, त्रिलोकचंद पीपलू तथा राजाबाबु गोधा सहित सभी श्रावक श्राविकाएं मोजूद थे।

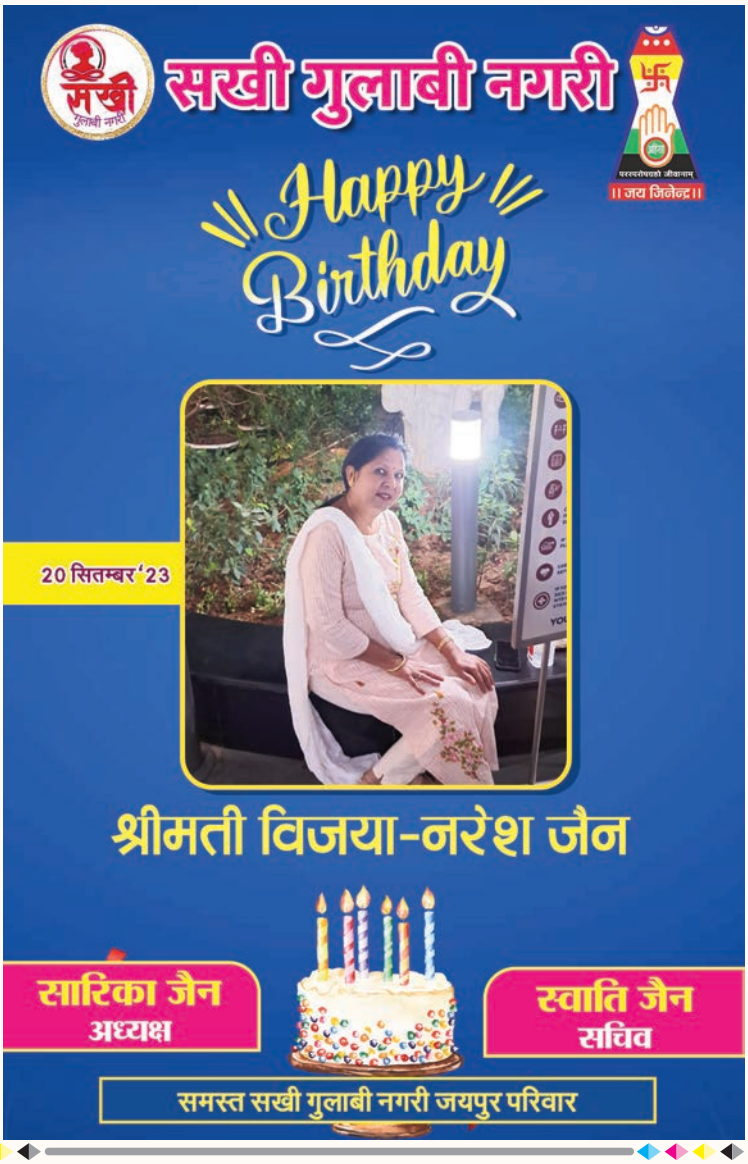

उत्तम क्षमा धर्म के साथ दसलक्षण पर्व प्रारंभ

लाडनूं जैन बड़ा मंदिर में भक्ति भाव के साथ मनाया गया उत्तम क्षमा धर्म

लाडनूं. शाबाश इंडिया। स्थानीय श्री दिगंबर जैन बड़ा मंदिर में दसलक्षण पर्व के प्रथम दिन उत्तम क्षमा धर्म हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर दिगंबर जैन समाज के लोगों ने उत्साह एवं भक्ति भाव के साथ श्रीजी की आराधना की। जैन समाज के मंत्री विकास पांड्या ने बताया कि दसों दिन जैन बड़ा मंदिर में प्रातः अभिषेक शांतिधारा, तत्वार्थसूत्र पर प्रवचन, भक्तामर पाठ, द्वादशांग जिनवाणी पूजा आयोजित होगी। उन्होंने बताया कि दोपहर में दसलक्षण धर्म विधान एवं चौबीस तीर्थंकर विधान की पूजा आयोजित की जाएगी। सांस्कृतिक कार्यक्रम संयोजक निर्मल पाटनी ने बताया कि रात्रि में प्रत्येक दिन भव्य महाआरती, प्रवचन एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। उन्होंने कहा कि जैन हाउजी, कौन बनेगा धर्मशिरोमणि, पहचानो कौन, जैन नृत्य एवं नाटिकाएं, म्यूजिकल हाउजी आदि अनेक रंगारंग कार्यक्रम आयोजित होगी। डॉ सुरेंद्र जैन ने तत्वार्थ सूत्र का वाचन करते हुए जैन समाज के श्रावक-श्राविकाओं को संबोधित किया। इस अवसर पर पूर्व अध्यक्ष सुरेश कुमार कासलीवाल, पूर्व मंत्री अनिल पहाड़िया, उपाध्यक्ष अशोक सेठी, राजेश कासलीवाल, प्रकाश पांड्या, पूर्व मंत्री चंद कपूर सेठी, सुरेंद्र कासलीवाल, महेंद्र गंगवाल, महेंद्र सेठी, सुरेंद्र सेठी, महावीर चूड़ीवाल, राहुल जैन, रंजू पांड्या, रेखा जैन, सुशीला कासलीवाल, डॉ मनीषा जैन, महिमा जैन, वीणा जैन, सहित सैकड़ो लोग उपस्थित थे।

जैन मंदिर महल योजना में हुआ दस लक्षण विधान का शुभारंभ

जयपुर. शाबाश इंडिया। तप संयम त्याग द्वारा आत्म शुद्धिकरण के दसलक्षण पर्व के प्रथम दिवस उत्तम क्षमा पर दस लक्षण विधान प्रारंभ किया गया। समिति प्रवक्ता अभिषेक सांघी ने बताया कि विधान का शुभारंभ, शुभ मुहूर्त में चतुर्दिक व मंगल कलश विधानमंडल पर स्थापित कर किया गया। महिला मंडल अध्यक्ष सुनीता बड़जात्या व युवा मंडल मंत्री धीरेंद्र जैन ने बताया की दस दिन तक चलने वाले इस पर्व पर प्रतिदिन प्रातः विधानपूजन एवं संध्या समय पर विभिन्न धार्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा।

श्री दिगंबर जैन मंदिर एस.एफ.एस. में दस लक्षण महापर्व पर विभिन्न कार्यक्रम का होगा आयोजन

जयपुर. शाबाश इंडिया। श्री दिगंबर जैन मंदिर एस.एफ.एस. राजावत फार्म मानसरोवर जयपुर में आज से दशलक्षण महापर्व का शुभारंभ बड़े उत्साह से प्रारंभ हुआ। आज दिनांक 19 सितंबर क्षमा धर्म पर प्रातः 6:30 बजे नित्य नियम अभिषेक शांति धारा पुण्यार्जक कमलेश कुमार सुशील हितेश अनीता भावेश हितांशी एवं समस्त कासलीवाल परिवार फागी वालों ने शांतिधारा की तुरंत पश्चात झंडा रोहण कर्ता नरेंद्र मंजू लौंगया 5/42 परिवार द्वारा किया गया। दीप प्रज्वलन ताराचंद ललित जैन पटेल नगर वालों ने किया। मंडल विधान कलश स्थापना हेतु विनोद रेखा जैन सचिवालय बिहार एवं दीप प्रज्वलित प्रोफेसर इंद्रप्रभ मृदुला ,राहुल अनिका जैन ने किया। मंडल पर सोधर्म इंद्र बनकर प्रेमचंद राजेश काला परिवार के द्वारा स्थापना की गई। मंडल विधान पूजन मिलाप चंद कमल जी टोंगया एवं सिमरन संस्कृति संस्थान महिला कॉलेज की आई हुई विदुषी अध्यापिकाओं द्वारा पूजन प्रारंभ करवाई गई। महामंत्री सौभाग मल जैन ने बताया कि आए हुए सभी अतिथियों का सम्मान समिति अध्यक्ष डॉक्टर राजेश कला मंत्री रवि बाकलीवाल युवा मंडल अध्यक्ष मनोज कला मंत्री जिनेंद्र जैन महिला मंडल मंत्री आशा जैन द्वारा किया गया। अध्यक्ष राजेश कल ने बताया कि सायंकल प्रतिदिन आरती के पश्चात प्रवचन माला एवं युवा मंडल महिला मंडल द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन भी रखा गया है।

पयूर्षण संवत्सरी महापर्व के अंतिम दिवस हजारो श्रध्दांलूओ ने उपवास के प्रत्याख्यान लिए अहिंसा भवन में

माफी मांगने वाले से बड़ा माफ करने वाला इंसान बड़ा होता है

भीलवाड़ा. शाबाश इंडिया। माफी मांगने वाले से बड़ा माफ करने वाला इंसान बड़ा होता है। मंगवार अहिंसा भवन मे पर्यूषण के अंतिमदिवस संवत्सरी महापर्व पर महासती प्रितीसुधा ने हजोरो श्रध्दांलू ओं एवं तपस्याथीयो को सम्बोधित करते हुए कहा कि हर व्यक्ति को अपने गीले शिकवे मिटाकर जीवन और रिश्तों की नई शुरूआत करने का दिन है,क्षमा मांगने वाले से क्षमा करने वाला बड़ा होता है। इस संसार मे ऐसा कौई भी मनुष्य पैदा नहीं हुआ है जो मरने के बाद अपने साथ लेकर कुछ गया हो जब इंसान ही नहीं रहेगा तो उसकी गलतियों का हम क्या करेंगे।हम अपने वैर भाव को भूलाकर आगे बढ़गे तभी हम इस मानव भव को सार्थक बना सकते है। साध्वी संयम सुधा ने कहा कि पर्यूषण मे हम कितनी भी तपस्या और साधना करले अगर हमारे मन में कपट और क्षमा की भावना नहीं है तपस्या और साधना का

फल हमे नहीं मिलने वाला है आपसी मतभेद और रंजिशें को खत्म करके हम रिश्तो की नई शुरूआत हम करेगे तो हमारा वर्तमान और भविष्य को सुधर जाएगा। अहिंसा भवन के अध्यक्ष लक्ष्मण सिंह बाबेल अशोक पोखरना ने बताया जानकारी देते हुए बताया कि पर्यूषण के अंतिम संवत्सरी दिवस पर हजारों श्रध्दांलूओ ने एक उपवास साथ कही बड़ी तपस्याओं के साध्वी प्रितीसुधा से प्रत्याख्यान लिए थे। बड़ी तपस्या करने वाले सभी तपस्याथीयो का श्रीसंघ के मीठ्ठालाल सिंघवी,उमरावसिंह संचेती, दिनेश गोखरू,हेमन्त आंचलिया,नवरतनमल बम्ब सुशील चपलोत,रिखबचन्द पीपाड़ा,डॉ.राजेंद्र लोधा,सुरेश सिंघवी विनीत गुगलिया,गजेंद्रसिंह पोखरना, जतिन जैन, मनोहरसिंह मेहता,शांतिलाल मेडतवाल,अशोक चौधरी,अनिल लोढ़ा विनोद बोहरा,पारस कोठारी हिम्मत सिंह बापना अशोक गुगलिया एवं महिला मंडल की अध्यक्षा नीता बाबेल,उमा आंचलिया,मंजू पोखरना, संजूलता बाबेल, रजनी सिंघवी सरोज महता आदि सभी ने तपस्वीयो को शोल माला पहनाकर स्वागत किया। निलिष्का जैन.बताया कि शायकाल भाई और बहनो ने अलग अलग स्थानो पर प्रतिक्रमंण किया । बुधवार को सभी श्रध्दांलू प्रातः अहिंसा भवन मे साध्वी वृंद के सानिध्य मे एक दुसरो से क्षमायाचना करेगें।

प्रवक्ता निलिष्का जैन

बंगाली बाबा गणेश मंदिर में मनी गणेश चतुर्थी

जयपुर. शाबाश इंडिया। दिल्ली रोड स्थित बंगाली बाबा गणेश मंदिर में चल रहे श्री महागणपति महोत्सव में मंगलवार को गणेश चतुर्थी धूमधाम से मनाया गया। इस मौके पर प्रथम पूज्य को मोदक अर्पित,महाआरती व बैंड वादन व भजन संध्या हुई। आयोजन में काफी संख्या में श्रद्धालुओं ने भाग लिया। बंगाली बाबा मंदिर प्रबंध समिति के अध्यक्ष नारायण लाल अग्रवाल व उपाध्यक्ष व कार्यक्रम संयोजक संजय पतंगवाला ने बताया कि आज सुबह से ही कार्यक्रम स्थल भक्ति और आस्था के रंग में डूबा नजर आया। इसके बाद शुरू हुए गणेश चतुर्थी के कार्यक्रम,जिसमें सुबह सबसे पहले प्रथम पूज्य के अभिषेक के बाद बंगाली बाबा गणेश को मोदक अर्पित किए। इसी दिन दोपहर में महाआरती व बैंड वादन के शाम को कोलकाता से आए फूलों से गणेश जी की विशेष फूल बंगले की झांकी सजाई गई। फूल बंगले में विराजे गणेश जी महाराज सभी को बीच आकर्षण का केन्द्र रहे। उन्होंने बताया कि इसके बाद हुई भजन संध्या में गणेश महाराज को भजन कलाकारों ने भजनों से रिझाया। इस दौरान दौरान मंदिर में आने वाले भक्तों को प्रसादी वितरित की गई। इस अवसर पर राजनैतिक,सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधियों ने अपनी हाजिरी लगाई।

दिगम्बर जैन धर्म का दसलक्षण महापर्व प्रारंभ

अजमेरा परिवार कोडरमा को मांगलिक कलश स्थापना का सौभाग्य मिला

बेगुर , बेंगलोर. शाबाश इंडिया। कर्नाटक जैन धर्म का सबसे बड़ा और त्यागमय पर्व पर्वाधिराज दशलक्षण महापर्व बैंगलोर में प्रारंभ जो भाद्रपद शुक्ल पंचमी से भाद्रपद शुक्ल चतुर्दशी दिनांक 19 सितंबर 2021 से 29 सितम्बर 2023 तक बहुत ही धूमधाम से बेगुर पारसनाथ दिगम्बर जैन मंदिर,बेगुर (बैंगलोर) कर्नाटक में मनाया जाएगा। जिसकी शुरूआत करते हुवे सभी लोगो में एक अलग उत्साह है। प्रथम दिन सबसे पहले श्री जी को पांडुकशीला पर 1008 श्री पारसनाथ भगवान की प्रतिमा को विराजमान किया इसके पश्चात प्रथम अभिषेक अनिल काला को प्राप्त हुआ और शांतिधारा अखिल जैन को प्राप्त हुआ इसके साथ ही दसलक्षण पर्व का मांगलिक कलश विराजमान किया गया जो दस दिनों तक बिराजमान रहेगा। जिसका सौभाग्य कोडरमा निवासी बेंगलोर प्रवासी अशोक-मंजू, बिनोद, पुनीत- निधि, अर्हम अजमेरा को प्राप्त हुआ। पर्वाधिराज दशलक्षण महा पर्व के आरम्भ आज हुवा जिसका आज प्रथम धर्म उत्तम क्षमा मनाया गया जैन धर्म ही एक ऐसा धर्म है जो अपने अनुयायियों को पापों को धोने का समय प्रदान करता है। इस अवसर पर विवेक बाकलीवाल, मनीष जैन। **शौरभ सिंघई, कोडरमा मीडिया प्रभारी राज कुमार अजमेरा,पुनीत अजमेरा ने दी।**

विधायक अशोक लाहोटी ने दी रोटतीज एवं दशलक्षण महापर्व की बधाई

जयपुर. शाबाश इंडिया। दिगम्बर जैन धर्मावलंबियों ने मंगलवार को रोट तीज पर्व भक्ति भाव से मनाया। दिगम्बर जैन बन्धुओं ने घरों में रोट-खीर एवं तुरई का रायता बनाकर अपने मित्रों,अन्य धर्मों के बन्धुओं को घर बुलाकर खिलाया। इससे पूर्व शुद्धता के साथ रोट बनाये जाकर सर्वप्रथम रोट, घी, बूरा, तुरई का रायता मंदिरों में पाट पर चढाया गया। राजस्थान जैन युवा महासभा के सांगानेर सम्भाग के अध्यक्ष चेतन जैन निमोडिया ने बताया कि सांगानेर विधायक डॉ अशोक लाहोटी को रोटतीज के मौके पर घर पधारे। इस मौके पर लाहोटी ने दिगम्बर जैन धर्मावलंबियों को रोटतीज एवं दशलक्षण महापर्व की बधाई दी। निमोडिया के अनुसार मंदिरों में श्रद्धालुओं द्वारा भक्ति भाव से चौबीस तीर्थंकरों की पूजा के बाद तीनों काल के 108 जाप्य "ॐ ह्री भूत वर्तमान भविष्यत काल सम्बन्धी चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यों नमः" किये गये। महिलाओं ने व्रत उपवास किये। यह व्रत तीन साल तक किया जाता है। जैन के मुताबिक रोट तीज के व्रत से अक्षय निधि की प्राप्ति होती है। भट्टारक परम्परा से रोट तीज की शुरूआत हुई। इसे त्रैलोक्य (त्रिलोक) तीज भी कहते हैं।

19 सितंबर 2023 शाश्वत तीर्थ अयोध्या में दिव्यशक्ति गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी से अयोध्या में वरिष्ठ पत्रकार, अतिशय क्षेत्र चूलगिरी के संरक्षक प्रवीण चंद्र छाबड़ा ने विभिन्न विषयों पर चर्चा की और छाबड़ा जी को आशीर्वाद दिया।

श्री दिगंबर जैन मंदिर चन्द्रप्रभ जी दुर्गापुरा, जयपुर में दशलक्षण महापर्व पर विधान का आयोजन हुआ

जयपुर. शाबाश इंडिया। श्री दिगंबर जैन मंदिर चन्द्रप्रभ जी दुर्गापुरा, जयपुर में दशलक्षण महापर्व में दिनांक 19 सितंबर 2023 मंगलवार को प्रातः 6.30 बजे मूल नायक श्री 1008 चन्द्रप्रभ भगवान जी के प्रथम अभिषेक शांतिधारा करने का पुण्यार्जन रमेश चन्द यशकमल जैन अजमेरा परिवार ने प्राप्त किया। दश लक्षण महा मण्डल पूजा के सोधर्म इन्द्र इंद्राणी अजीत शशि तोतूका रहे तथा महा आरती का पुण्यार्जन भी प्राप्त किया। ट्रस्ट के अध्यक्ष प्रकाश चन्द जैन चांदवाड़ एवं मंत्री राजेन्द्र कुमार जैन काला ने बताया कि उत्तम मार्दव धर्म की पूजा भक्ति भाव से श्रद्धालुओं द्वारा की गई। महाआरती के पश्चात उत्तम क्षमा धर्म पर श्री दिगम्बर जैन श्रमण संस्कृति संस्थान सांगानेर की गरिमा व रीतिका जैन बालिकाओं ने प्रवचन किए। सांस्कृतिक कार्यक्रम में दस धर्म पर हाऊजी कार्यक्रम के मुख्य अतिथि कमल कुमार मंजू पाटोदी एवं दीप प्रज्वलन कर्ता नेमी कुमार श्रीमती मुन्ना देवी जैन छाबड़ा परिवार थे।

नेमीसागर कॉलोनी जैन समाज ने उत्तम क्षमा धर्म मनाया

जयपुर. शाबाश इंडिया। आत्म शुद्धि के महापर्व दसलक्षण महोत्सव के पहले दिन नेमीसागर कालोनी में उत्तम क्षमा धर्म मनाया गया। इस अवसर पर भगवान के कलशाभिषेक, शांतिधारा एवं संगीतमय पूजन की गई। विधानाचार्य पण्डित रमेश जैन ने श्रावको को क्षमा धर्म का महत्व बताया। सायंकाल में आरती, प्रवचन एवं धर्म को जानो और जीतो नामक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। पूजन स्थापना जे के जैन कालाडेरा, आरती कांतिलाल दोसी परिवार, दीप प्रज्जवलन जयकुमार बड़जात्या द्वारा की गई। सांस्कृतिक कार्यक्रम में नेमीचंद ठोलिया एवं श्रीमती मुन्नी ठोलिया द्वारा पुरस्कार वितरण किया गया। उल्लेखनीय है कि नेमीसागर कालोनी में दसलक्षण पर्व पर दस दिन तक आयोजन किए जावेंगे।

10 लक्षण पर्व के प्रथम दिन बड़े दीवान जी के मंदिर में महिला जागृति संघ की तरफ से भक्तामर का पाठ किया गया...

जैन समाज रेनवाल द्वारा दशलक्षण पर्व पर भव्य आयोजन

रेनवाल/जयपुर. शाबाश इंडिया

जैन समाज रेनवाल द्वारा स्थानीय पार्श्वनाथ मंदिर जी में दशलक्षण पर्व प्रारंभ हुए। प्रातः प्रथम अभिषेक एवं शांतिधारा की बोली विमल कुमार, विकास कुमार विनायक द्वारा ली गई। तत्पश्चात समाज के लोगों द्वारा श्री जी का अभिषेक किया। प्रातः दशलक्षण मंडल विधान की पूजा आरंभ हुई। विधान में मंगल कलश की स्थापना विनोद कुमार-मीना देवी गंगवाल द्वारा की गई। दीप प्रज्वलन कमल कुमार-ममता देवी गंगवाल द्वारा किया गया। विधान की पूजा में मधु बिलाला, आशा बिलाला द्वारा भजन प्रस्तुत किए गए। श्रवण संस्कृति संस्थान सांगानेर से पधारे पंडित अनुभव शास्त्री जी द्वारा उत्तम क्षमा पर प्रवचन दिए गए। सायंकाल भक्तामर में प्रथम दीप प्रज्वलन रेनवाल नगर पालिका अध्यक्ष श्रीमान अमित जी ओसवाल द्वारा किया गया। इस अवसर पर ललित पाटनी, हितेश डोलिया, चंद्र कुमार गोधा, यतिन डोलिया, प्रतीक बिलाला, वर्धमान गंगवाल, नवरतन सोगानी, महावीर गंगवाल आदि उपस्थित थे।

संवत्सरी पर रूप रजत विहार में उमड़ा आस्था व भक्ति का सैलाब

सुनील पाटनी. शाबाश इंडिया

भीलवाड़ा। शहर के चन्द्रशेखर आजादनगर स्थित रूप रजत विहार में श्री अरिहन्त विकास समिति के तत्वावधान में पहली बार हो रहे चातुर्मास के सबसे बड़े आयोजन अष्ट दिवसीय पर्वाधिराज पर्युषण पर्व के अंतिम दिन संवत्सरी को मरूधरा मणि महासाध्वी श्रीजैनमतिजी म.सा. की सुशिष्या महासाध्वी इन्दुप्रभाजी म.सा. के सान्निध्य में तपस्या, साधना व भक्ति की ऐसी अविरल त्रिवेणी धारा प्रवाहित हुई जिसमें सरोबार होकर हर कोई स्वयं को धन्य महसूस कर रहा था। शहर व आसपास के विभिन्न क्षेत्रों से श्रावक परिवार सहित संवत्सरी की आराधना के लिए पहुंचे थे। श्रावक-श्राविकाओं का ऐसा सैलाब उमड़ा कि मुख्य हॉल के अतिरिक्त जो पांडाल तैयार किया गया था वह भी पूरी तरह भर जाने से कई श्रावकों ने आसपास मकानों के बाहर बैठ संवत्सरी की जिनवाणी श्रवण का लाभ प्राप्त किया। तपस्या की होड़ ऐसी लगी कि संवत्सरी के दिन ही करीब एक दर्जन तपस्वियों ने अठाई या उससे बड़ी तपस्या के प्रत्याख्यान ग्रहण किए। कई श्रावक-श्राविकाओं ने पांच, तेला, बेला, उपवास, आयम्बिल, एकासन के भी प्रत्याख्यान लिए। पर्युषण पूर्व ही डेढ़ दर्जन से अधिक अठाई तप की आराधना हो चुकी थी। सामायिक साधना की ऐसी होड़ भी पहली बार देखी गई कि श्राविका ही नहीं कई श्रावकों ने भी मात्र पर्युषण के आठ दिन में 140-150 सामायिक तप की साधना कर ली यानि प्रतिदिन 15 से 18 घंटे सामायिक तप में व्यतीत किए। इसी तरह आठों दिन नवकार महामंत्र की अखण्ड आराधना के माध्यम से भी लाखों नवकार महामंत्र जाप का उच्चारण कर रूप रजत विहार में भक्ति की पॉजिटिव एनर्जी का संचार हो गया। संवत्सरी धर्म आराधना कार्यक्रम के दौरान साध्वी मण्डल से लेकर वरिष्ठ सुश्रावकों तक ने एक सुर में कहा परिवारों की संख्या की दृष्टि से छोटे संघ में पहले ही चातुर्मास में जिनशासन भक्ति का ऐसा अद्भुत नजारा परमात्मा की कृपा से प्रस्तुत हुआ है।

उत्तम क्षमा धर्म से दसलक्षण महापर्व की शुरूआत

संगीतमय पर्व मंडल विधान पूजन, सांस्कृतिक कार्यक्रम मे धार्मिक नाटिका का मंचन

अनिल पाटनी. शाबाश इंडिया

अजमेर। दसलक्षण महापर्व के प्रथम दिन उत्तम क्षमा धर्म पर आचार्य विवेक सागर महाराज ने गोधों की नसियां में प्रवचन करते हुए कहा कि जो हमारी आत्मा को पवित्र करता है विशुद्ध करता है उसका नाम पर्व है, पर्युषण महापर्व में दस लक्षण धर्म की आराधना की जाती है, ये पर्व हमें धर्म की प्रेरणा देते हैं एवं पुण्य की ओर प्रेरित करते है, हमें पर्युषण पर्व मनाने का अवसर मिल रहा है। इन दस दिनों मे भगवान ने हमें अपने-अपने दिल की सफाई का अवसर दिया है। आचार्य महाराज ने कहा क्रोध एक प्रकार का नरक है और क्षमा एक प्रकार का स्वर्ग। पदम चन्द सोगानी ने बताया उत्तम क्षमा धर्म पर प्रात जिनेंद्र अभिषेक, शांतिधारा तत्पश्चात संगीतमय विधान पूजन के मांडले पर मुख्य मंगल कलश मनोज - अभिषेक कोलानायक एंव चतुर्थकोण मंगल कलश की स्थापना मुकेश पाण्डया, अरूण गोधा, राकेश पालीवाल व सुशील बाकलीवाल परिवार ने की लोकेश ढिलवारी आदि स्वर लहरीयो द्वारा संगीयमय पूजन मे उपस्तिथि श्रदालुओं ने मांडले पर अर्घ समर्पित किये। समिति अध्यक्ष सुशील बाकलीवाल, कोमल लुहाड़िया, विनय पाटनी, ललित पाण्डया आदि ने सभी सहयोगी परिवार को अभिन्नदन पत्र देकर स्वागत किया। समिति अध्यक्ष सुशील बाकलीवाल ने बताया पंचायत छोटा धड़ा नसियां में सांय जिनेन्द्र महाआरती तत्पश्चात सांस्कृतिक कार्यक्रम के अन्तर्गत ''निशांत आर्ट ग्रुप दिल्ली'' के सुप्रसिद्ध कलाकारो द्वारा आध्यात्मिक एवं प्रेरणादायी ''शील सुन्दरी अन्नतमती'' नाटिका का मंचन किया एंव उपस्तिथि श्रदालुओं मे से ड्रा द्वारा 5 भाग्यशालीयों का चयन कर पुरस्कार प्रदान किये।